

दिसम्बर 2017

कीमत ₹ 15

# दादावाणी

मैं अनंत शक्ति वाला हूँ  
मैं सुक्ष्म हूँ  
मैं अनंत सुख का धाम हूँ  
मैं अमूर्त हूँ  
मैं असंग हूँ  
मैं अपुरु-लघु स्वभाव वाला हूँ  
मैं अरूपी हूँ  
मैं अनंत दर्शन वाला हूँ  
मैं विशुद्धात्मा हूँ  
मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ  
मैं शुद्धात्मा हूँ  
मैं टंकीत्कीर्णवत् ऐसा शुद्धात्मा हूँ  
मैं अव्याबाध स्वरूपी हूँ  
मैं परमानंद स्वरूपी हूँ



सिद्धस्तुति सब से बड़ी सामायिक कहलाती है, सिद्ध सामायिक।  
यह बिल्कुल शुद्ध उपयोग माना जाता है, यह शुक्लध्यान के खाते में जाता है।

संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : 13 अंक : 2

अखंड क्रमांक : 146

दिसम्बर 2017

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

8155007500

**Printed & Published by**

**Dimple Mehta** on behalf of  
**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

**Owned by**

**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

**Printed at**

**Amba Offset**

B-99, GIDC, Sector-25,

Gandhinagar - 382025.

**Published at**

**Mahaveideh Foundation**

Simandhar City,

Adalaj - 382421,

Dist-Gandhinagar.

Total 32 pages including cover

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**

**15 साल**

भारत : 1500 रुपये

यू.एस.ए. : 150 डॉलर

यू.के. : 120 पाउन्ड

**वार्षिक**

भारत : 100 रुपये

यू.एस.ए. : 15 डॉलर

यू.के. : 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से

संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

सिद्धस्थिति की प्राप्ति के लिए सिद्धस्तुति

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) की कृपा से महात्माओं को आत्मज्ञान तो प्राप्त हुआ है। अब एक-एक अंश करके आत्मा का अनुभव बढ़ता जाएगा और जब सारे अंश इकट्ठे हो जाएँगे, सारे आत्मगुण प्रकट हो जाएँगे, तब खुद मूल स्वभाव में आ जाएगा, पूर्ण दशा में। आत्मा तो सिद्ध ही है, परमात्मा ही है लेकिन महात्माओं को कर्म खपाए बगैर यह ज्ञान मिला है इसलिए अभी तक आत्मा पूर्ण रूप से अनुभव में नहीं आया है। यदि आत्मा को पूर्णतः जान जाएँ, वह पूर्णतः अनुभव में आ जाए तो वह खुद ही भगवान है। आत्मा के जितने गुण हैं, उन्हें जाने, उन पर विचार करे, मनन करे, ध्यान करे तो उतने ही वे गुण उत्पन्न होंगे। उतने ही आत्मा के प्रदेश निरावृत होते जाएँगे। वैसे-वैसे ज्ञान प्रकाशमान होता जाएगा और आनंद बढ़ता जाएगा क्योंकि आत्मा अचिंत्य चिंतामणि है, जैसा चिंतन करता है तुरंत वैसा ही बन जाता है लेकिन रत्न चिंतामणि का उपयोग करना आना चाहिए। आत्मा का ही अखंड चिंतन रहना चाहिए।

निश्चय-व्यवहार चरण विधि के बीच वाले भाग में 'मैं... हूँ' वाले जो ज्ञान वाक्य हैं, जैसे कि 'मैं अनंतज्ञान वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ, अनंत शक्ति वाला हूँ, अनंत सुख का धाम हूँ, अव्याबाध स्वरूप हूँ, अमूर्त हूँ, सूक्ष्म हूँ, अगुरु-लघु स्वभाव वाला हूँ, अविनाशी हूँ, अव्यय हूँ, अच्युत हूँ, अरूपी हूँ, टंकोत्कीर्ण हूँ, अमर हूँ, अक्षय हूँ,' उन्हें बोलने से आत्मा के मूल गुणों की भजना होती है। उसे भगवान ने सिद्धस्तुति कहा है। सिद्धस्तुति का फल तुरंत ही मिलता है। वह सब से बड़ी सामायिक कहलाती है, सिद्ध सामायिक। वह बिल्कुल शुद्ध उपयोग है। वह शुक्लध्यान के खाते में जाता है।

शुद्धात्मा तो हमें दादाश्री ने बना दिया है लेकिन फिर हम अंदर खुद के आत्मस्वरूप में नहीं रहते। बाहर देहाध्यास में ही चले जाते हैं क्योंकि अंदर जाने का अभ्यास ही नहीं किया है। वास्तव में तो इन गुणों को हमेशा दिनभर बोलना चाहिए। खाली समय हो तब बोलना चाहिए। यदि खाली समय नहीं हो लेकिन कोई परेशानी आ जाए तो, तब बोलना चाहिए। यदि पहले से ही इन गुणों की स्टडी की हो तो चाहे कैसा भी समय आए, परिषह या उपसर्ग आए तब भी 'खुद की' स्थिरता नहीं डिंगेगी!

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री सिद्धस्तुति का महत्व समझाते हैं कि उसका प्रयोग किस तरह से करना चाहिए ताकि खुद के अनंत गुण प्रकट हो जाएँ। दादाश्री खुद जिस संपूर्ण अनुभव दशा में पहुँचे हैं, उसी दशा तक पहुँचने के पुरुषार्थ के स्टेपिंग में प्रत्येक महात्मा के लिए सिद्धस्तुति का उपयोग सहायक हो। यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

**सिद्धस्थिति की प्राप्ति के लिए सिद्धस्तुति**

**आत्मा कल्प स्वरूप**

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा का स्वरूप क्या है ?

**दादाश्री :** आत्मा, वह तो कल्प स्वरूप है, आनंद स्वरूप है।

**प्रश्नकर्ता :** कल्प अर्थात् क्या ?

**दादाश्री :** आत्मा की अनंत शक्ति है, उसमें कल्प नामक एक शक्ति है। वह कल्प शक्ति बाहर जाती है। कल्प शक्ति से अहंकार उत्पन्न होता है। यह सब भ्रान्ति से ही उत्पन्न होता है।

**प्रश्नकर्ता :** ‘कल्प शक्ति से अहंकार उत्पन्न होता है’, इसका क्या अर्थ है ?

**दादाश्री :** अर्थात् खुद जैसी कल्पना करता है वैसा ही हो जाता है और जैसा चिंतन करता है वैसा ही हो जाता है फिर वैसा फल आता है।

वह विभाविक ‘मैं’ कल्पना करता है और उससे आत्मा की (मूल) कल्प नामक शक्ति का लीकेज होता है। कल्प फिर विकल्प और विकल्प में से संसार उत्पन्न हो जाता है। यदि विकल्प नहीं होता तो संसार उत्पन्न ही नहीं होता।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् आत्मा की कल्पना से, चिंतन से विकल्प होता है ?

**दादाश्री :** मूल आत्मा खुद चिंतन नहीं करता लेकिन जैसे ही अहंकार, विभाविक ‘मैं’ का

आरोपण हो कर चिंतन होता है जैसे ही विकल्प उत्पन्न हो जाते हैं। खुद कल्प नहीं रहा इससे विकल्प उत्पन्न हुआ। उसने किसी भी प्रकार की कल्पना की तो विकल्प उत्पन्न होता है।

आत्मा तो मूलतः वीतराग ही है, वह रागी या द्वेषी नहीं है। उसके स्वभाव में इच्छा है ही नहीं लेकिन जब आत्मा को दूसरे तत्त्वों का संयोग टच होता है तब उसका स्वभाविक सुख उपाधिभाव हो जाता है और विकल्प हो जाते हैं, विभाविक हो जाता है। कल्प स्वभावी होने के कारण उपाधिभाव से जैसा चिंतन करे, वह वैसा ही बन जाता है।

**जैसा चिंतन करे, वैसा ही हो जाता है**

आत्मा का स्वभाव कैसा है ? अचिंत्य चिंतामणि है। अतः जैसा चिंतन करता है तुरंत वैसा ही हो जाता है।

आत्मा कल्प स्वरूप है। अतः उसकी लाइट बाहर जाने पर अहंकार उत्पन्न हो गया। वह खुद चिंतन नहीं करता है लेकिन अहंकार का आरोपण होने पर जैसे ही चिंतन होता है, जैसे ही विकल्प उत्पन्न हो जाते हैं !

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि हर एक सेकन्ड में आत्मा का स्वरूप बदलता जाता है ? हम तो हर सेकन्ड पर चिंतन बदलते हैं !

**दादाश्री :** हर सेकन्ड पर नहीं, सेकन्ड के छोटे से छोटे भाग में भी बदलता रहता है। लेकिन इतना अधिक उपयोग नहीं रहता किसी का।

चिंतन किसका करना है? आत्मा का। 'मैं आत्मा हूँ, ऐसा नहीं हूँ। आत्मा ऐसा नहीं होता। ऐसा नहीं होता, ऐसा नहीं होता, ऐसा नहीं होता।' चिंतन कैसा होना चाहिए? चिंतन अखंड होना चाहिए।

जिसकी कल्पना भी न की जा सके, ऐसा चिंतामणि स्वरूप है, प्रभु का। चिंतामणि अर्थात् जो माँगो, वह मिलता है। जैसा चिंतन करो, वैसा फल देता है। अचिंत्य अर्थात् जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सके। उसकी तोल तो आप कभी भी नहीं कर सकोगे।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर उसका चिंतन कैसे होता है?

**दादाश्री :** हो ही नहीं सकता। आपकी दृष्टि तो भौतिक के सम्मुख है न? वह तो, जब ज्ञानीपुरुष आपके पाप धो देते हैं और आपकी दृष्टि बदल देते हैं, उसे अध्यात्म के सम्मुख, आत्मा के सम्मुख कर देते हैं तब आपकी दृष्टि पहुँचती है, नहीं तो नहीं पहुँचती न! उसके बाद अचिंत्य चिंतामणि हाथ में आता है।

**प्रश्नकर्ता :** आत्मतत्त्व का चिंतन तो मनुष्यों को करना ही चाहिए और करते भी हैं ही न?

**दादाश्री :** हाँ, करना चाहिए। जब तक 'ज्ञानीपुरुष' उसे सचेतन नहीं बना देते तब तक वह शुद्ध चिंतन नहीं माना जाता लेकिन शब्द से चिंतन करता है। वह एक प्रकार का उपाय है। वह रास्ते में आने वाला बीच का स्टेशन है।

अब आत्मा (व्यवहार आत्मा) का एक

गुण ऐसा है कि जैसा चिंतन करे तुरंत वैसा ही हो जाता है। स्वरूप के अलावा अन्य कोई भी चिंतन *पुद्गल* (जिसमें पूरण और गलन होता है) को खींचता है। अब *पुद्गल* का जो संयोग मिला है, व्यवस्थित शक्ति उसका वियोग करवा देती है लेकिन आत्मा का जो संयोग मिला है, उसका वियोग कौन करवाएगा?

**आत्मा का चिंतन करने से आत्मा प्राप्त होता है**

आत्मा के तो अनंत *पासे* (फलक) हैं। जिस *पासे* पर से घुमाओ, वह वैसा ही दिखाई देता है। चाहे किसी भी *पासे* पर से घुमाओ, वह उसी की तरह का दिखाई देता है। अनंत फलक नहीं हैं क्या? जिस *पासे* पर रखो, वह वैसा ही हो जाता है।

इस संसार में जन्म से ही लोग 'उसे' अज्ञान का प्रदान करते हैं कि 'यह बच्चा है, बेटा ये तेरे पापा हैं, ये तेरी मम्मी' ऐसा करके अज्ञान का प्रदान किया जाता है, फिर 'उसे' पूरी 'रोंग बिलीफ' बैठ जाती है। वह 'बिलीफ' कोई 'फ्रैक्चर' नहीं कर सकता। बाकी, यों ही अगर कहें कि 'आप शुद्ध हो', ऐसा कैसे चलेगा? 'आपकी' समझ में फिट होना चाहिए, तभी यह 'रोंग बिलीफ' फ्रैक्चर होगी। नहीं तो 'रोंग बिलीफ' फ्रैक्चर नहीं होगी और तब तक 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह कोई 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करेगा ही नहीं। अभी तक पूरी जिंदगी 'मैं चंदूभाई हूँ, मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा कर-करके एक-एक परमाणु में यह घुस गया है। अब इसे निकालना, इस 'रोंग बिलीफ' को 'फ्रैक्चर' करना, वह तो 'ज्ञानीपुरुष' ही कर सकते हैं।

'आपकी' 'बिलीफ' के अनुसार आपको गुण प्राप्त होंगे। 'आप' 'चंदूभाई' रहोगे तो आप में प्राकृत गुण प्राप्त होंगे और 'आप' 'शुद्ध चैतन्य'

बन जाओगे तो फिर खुद के 'स्वभाविक' गुण उत्पन्न होंगे! आपको जहाँ पर बैठना है, वहाँ बैठो।

आत्मा में दुःख नाम का गुण नहीं है, चिंता नाम का गुण नहीं है लेकिन यदि उल्टा, विभाविक चिंतन करे तो विभाविक गुण उत्पन्न होता है। 'मैं फँस गया' ऐसा चिंतन हुआ कि वह फँस जाता है। 'चोरी करनी चाहिए' यदि ऐसा चिंतन करने लगा तो चोर बन ही जाता है।

### ये सभी सायकोलॉजिकल इफेक्ट्स

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा तो शुद्ध ही है तो फिर आत्मा में यह चीज़ कैसे आएगी ?

**दादाश्री :** आत्मा तो शुद्ध ही रहता है! लेकिन यह अहंकार जो भी करता है, जैसा चिंतन करता है वैसा हो जाता है। उसे व्यवहार आत्मा, मिकेनिकल आत्मा या प्रतिष्ठित आत्मा कहते हैं। 'मैं दिवालिया हूँ', ऐसा चिंतन करते ही दिवालिया हो जाता है। 'मैं बीमार हूँ', ऐसा चिंतन करते ही बीमार हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा जैसा चिंतन करे, वैसा हो जाता है तो हम चिंतन करें कि मुझे हजार रुपए मिल जाएँ या और कोई चीज़ मिल जाए तो वह क्यों इफेक्ट में नहीं आता ?

**दादाश्री :** वह 'इफेक्ट' में 'ओन द मोमेन्ट' (तुरंत ही) आ जाता है लेकिन ज्ञानी की भाषा में समझो तो समझ में आएगा। हजार रुपए का चिंतन किया तो तुरंत ही वह याचक बन गया। पैसे मिलेंगे करेंगे नहीं लेकिन खुद याचक बन जाता है। 'खुद बहुत दुःखी है', ऐसा चिंतन करते ही खुद का अनंत सुख आवृत हो जाता है और दुःखिया बन जाता है। 'मैं सुखमय हूँ', ऐसा चिंतन करे तो सुखमय बन जाता है। सास से किच-किच करे तो किच-किचवाली बन जाती

है फिर तो चाय पीने के लिए भी किच-किच करती है क्योंकि किच-किच का चिंतन किया है!

आत्मा खुद अनंत शक्ति वाला है! सभी प्रकार की शक्तियाँ अंदर से निकलें, ऐसी है। जितनी शक्तियाँ निकालनी आएँ, उतनी आपकी। लेकिन एक बार उस अनंत शक्ति का भान हो जाना चाहिए। यह तो उल्टा चिंतन करता है, इसलिए उलझन खड़ी होती है। एक बार शुद्धात्मा का चिंतन प्राप्त हो जाए तो उसके बाद वह अपने आप ही रहेगा, खुद को कुछ भी करना नहीं पड़ेगा। आप जहाँ जाओ, वहाँ पर आपको शुद्धात्मा का चिंतन होता ही रहता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** यह ज्ञान है ही क्रियाकारी! ऐसा लाखों वर्षों में कभी हुआ ही नहीं है!

**प्रश्नकर्ता :** पागल आदमी 'मैं समझदार हूँ', ऐसा चिंतन करे तो वह क्या समझदार हो जाएगा ?

**दादाश्री :** हाँ, ऐसा करे तो वह समझदार होता जाएगा। यह तो अंदर असर हो चुका है, साइकोलॉजिकल इफेक्ट्स (मानसिक असरे)। हम तो एक भी असर अंदर होने ही नहीं देते।

**प्रश्नकर्ता :** लोग कहते हैं कि 'आप ऐसे हो, आप जैसे हो' तो उसका क्या ?

**दादाश्री :** लोग भले ही कुछ भी कहें लेकिन आप पर उसका असर नहीं होना चाहिए कि 'मैं ऐसा हूँ', आपको तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' बस इतना ही रहना चाहिए।

**क्रिया या विचार नहीं, आशय अर्थात् चिंतन**

आत्मा का कोई भी चिंतन बेकार नहीं जाता। इतना अच्छा है कि चिंतन स्थूल स्तर पर ही होता

है इसलिए चल जाता है। उच्च प्रकार के चिंतन में एक मिनट में पाँच हजार के 'रिवोल्यूशन' होते हैं। हर एक का चिंतन अलग-अलग होता है, ऐसा अनंत प्रकार का चिंतन है इसीलिए तो इस जगत् में तरह-तरह के लोग दिखाई देते हैं न!

**प्रश्नकर्ता :** चिंतन किसे कहते हैं?

**दादाश्री :** आत्मा का गुण क्या है? जैसा चिंतन करे वैसा ही हो जाता है। अब चिंतन किसे कहते हैं? आप ये जो सभी क्रियाएँ करते हैं, उन्हें चिंतन नहीं कहते। आप सोचते हो, उसे चिंतन नहीं कहा जाता। चिंतन तो आशय को कहा जाता है। आपका आशय क्या है? मन में एक आशय तय किया होता है कि 'अब एक बंगला, एक बगीचा', ऐसा तय करके, 'इस तरह से बच्चे को पढ़ाऊँगा', ऐसा सब चिंतन करता है भीतर। करता है या नहीं? और 'रिश्वत के पैसे लेने में कोई हर्ज नहीं, वह तो आजकल सभी लेते ही हैं,' तब फिर वह वैसा ही हो जाता है।

चोरी करने का चिंतन करे तो वैसा हो जाता है और दान देने का चिंतन करे तो वैसा हो जाता है, सिद्ध होने का चिंतन करे तो सिद्ध हो जाता है लेकिन सिद्ध कैसे बनें, उस मार्ग को जानना चाहिए। आत्मा जानने के बाद सिद्ध बन सकता है। बाकी, संसार में आत्मा जाने बगैर आगे चलता है, जैसा चिंतन करता है वैसा ही हो जाता है।

मैं ज्ञानी तो ज्ञानी। 'मुझे कुछ स्पर्श नहीं करता' कहने से ज़रा भी टच नहीं होता, ज़रा भी लेप नहीं चढ़ता लेकिन 'मुझे टच हुआ' कहा कि चिपका।

बल्कि लोग मुझ से पूछते हैं, "आप ऐसा क्यों कहते हैं कि 'मैं ज्ञानी हूँ'?" तब मैंने कहा,

'क्या कहूँ, वह तू बता। अब तू मुझे सिखा। तू जैसा कहेगा वैसा ही कहूँगा।' तब कहने लगा, 'ऐसा बोलना ही मत।' मैंने कहा, 'ऐसा क्यों?' कोई मुझ से ऐसा पूछे 'आप कौन हो' तो मुझे क्या कहना है? मुझे क्या ऐसा कहना है कि 'मैं भगत हूँ?' क्योंकि आत्मा तो जैसा कल्पे वैसा हो जाता है। फिर 'मैं भगत हूँ' ऐसा कहूँगा तो फिर वापस भगत में आ जाऊँगा। ज्ञानीपद छूट जाएगा।

### व्यवहार आत्मा वह 'रत्न चिंतामणि'

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा के बारे में चिंतन करने से वैसा बन जाता है क्या?

**दादाश्री :** आत्मा का चिंतन करने से वह आत्मा प्राप्त करता है। जैसा चिंतन करे, वैसा ही हो जाता है, उसे 'रत्न चिंतामणि' कहा।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् व्यवहार आत्मा भी रत्न चिंतामणि जैसा है, ऐसा कहा जाएगा न!

**दादाश्री :** यह व्यवहार आत्मा है ही रत्न चिंतामणि लेकिन क्या चिंतन करता है? 'मैं तो इनका जमाई हूँ' तो भाई, ऐसा रहना है क्या? रत्न चिंतामणि का ऐसा लाभ उठाना है? यह क्या जमाई होने के लिए है? 'इनका ससुर हूँ, इनका साला हूँ,' कहता है। क्या ऐसा चिंतन करने के लिए है?' रत्न चिंतामणि तो ठेठ आत्मा प्राप्त करवाता है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह तो कैसा भव्य है कि व्यवहार आत्मा को भी रत्न चिंतामणि कहा है तो शुद्धात्मा कैसा होगा?

**दादाश्री :** उसकी तो बात ही क्या करनी! आत्मा खुद ही समाधि स्वरूप है, खुद ही मोक्ष स्वरूप है, खुद ही परमात्मा है। हर प्रकार से खुद ही है, अचिंत्य चिंतामणि है। वह खुद ही

भगवान है लेकिन लोगों में व्यवहार आत्मा का चिंतन कितना अधिक काम करता है कि यदि यह चिंतन करे कि, 'मैं उपाध्याय बन गया, अब आचार्य बनूँगा,' तो वह आत्मा कहेगा, 'जाओ, आप आचार्य बन जाओ', बोलो, कौन चिंतन करता है? व्यवहार आत्मा!

### गुणधर्म बोल कर, प्राप्त करो शक्तियाँ

आत्मा का स्वभाव है कि जैसा चिंतन करे, वैसा ही हो जाता है। वह उसका गुण है अर्थात् लोगों ने जैसा-जैसा चिंतन किया, उसका आत्मा वैसा ही हो गया है। अब मूल क्या है? मूल ध्यान तो क्या है!' उसका चिंतन बहुत मुश्किल है इसलिए हम ने आत्मा का लक्ष (जागृति) बैठा दिया और हम ने शुद्धात्मा के गुणधर्मों का विवरण किया। वह जो गुणधर्मों का लक्ष बैठ गया है, उन गुणधर्मों का यदि चिंतन करता रहे तो दिनोंदिन, उसी रूप होता जाता है। खुद का स्वभाव क्या है? कि जैसा चिंतन करे, वैसा ही होता जाता है, बस।

**प्रश्नकर्ता :** जो जिसका चिंतन करे उस रूप हो जाता है!

**दादाश्री :** हाँ, उसी रूप हो जाएगा न यह सब। अनेक रूप होने का कारण यही है न और बहु रूप होने का कारण यही है। अर्थात् जैसा चिंतन करे आत्मा वैसा ही बन जाता है और दूसरी किसी चीज़ में ऐसा गुण नहीं होता, 'जैसा चिंतन करे वैसा।' 'अचिंत्य चिंतामणि रत्न' कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** जेजुं करीए चिंतवन तेवो ज थई जाय,  
अनंतानंत गुणी स्वाभावकि स्वाध्याय,  
दादाने दर्शने ज्ञान जे समजी जाय।

- नवनीत

**दादाश्री :** अनंत गुणों का धाम है आत्मा। तो जैसा चिंतन करोगे, वह वैसा हो जाएगा। स्वभाविक रूप से उसी रूप हो जाता है। ज्ञानीपुरुष का चिंतन करे तो वैसा बन जाता है।

यह रत्न चिंतामणि आपके हाथ में दिया है। उससे जैसी चाहिए वैसी शक्तियाँ, खुद के गुणधर्म एक घंटे तक बोलने से ही मिल जाएँ, ऐसा है। उसका लाभ उठाना आना चाहिए, रत्न चिंतामणि का उपयोग करना आना चाहिए। ये रत्न चिंतामणि ऐसे हैं कि यदि उपयोग करना नहीं आए तो जला देता है और उपयोग करना आ गया तो परमात्मा बना देता है।

आत्मा का मुख्य गुण है कि जैसा आसपास का सर्कल दिखा कि उस रूप हो जाता है। जिसकी भक्ति करे उस रूप हो जाए।

### गुणों की भजना से खुद बनता है उसी रूप

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा के गुण बोलने को कहा है न, उसके बारे में और अधिक समझना है।

**दादाश्री :** किसी भी जगह पर ममता रखने जैसी नहीं है इस दुनिया में। मैं कहता हूँ, आत्मा को जानो और आत्मा ही आपका है और आपको उसके गुणों के प्रति ममता रखनी है मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ, मैं अनंत शक्ति वाला हूँ, मैं अनंत सुख का कंद हूँ, अव्याबाध हूँ, अमूर्त हूँ, सूक्ष्म हूँ, अगुरु-लघु हूँ, टंकोत्कीर्ण हूँ। कितने ही गुण हैं उसके! वह उसका ममत्व है।

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा का ममत्व?

**दादाश्री :** हाँ, मेरे गुण अर्थात् ममत्व नहीं है लेकिन यदि ऐसा कहेंगे कि 'मैं यह हूँ' तो यह ममता कहाँ जाएगी? वहाँ चली जाएगी, उसी के साथ। और फिर मोक्ष जाते हुए वह भी खत्म

हो जाएगी। बाद में सिर्फ उसी एक स्वरूप में! फिर ऐसा नहीं बोलना पड़ेगा, 'मैं शुद्धात्मा हूँ।'

**प्रश्नकर्ता :** अगर खुद आत्मा के गुणधर्मों, अनंत ज्ञान-दर्शन, का ध्यान करे तो वो प्राप्त हो जाएंगे क्या ?

**दादाश्री :** होंगे, अवश्य होंगे। आत्मा के जितने गुण जानें और उनका ध्यान करें तो उतने प्राप्त होंगे।

हम ज्ञान देते हैं तो मन-वचन-काया आपको कभी भी याद न आए, उस तरह से देते हैं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' उसके साथ उसके एक-एक गुण गाते जाओगे तो अद्भुत परिणाम आएगा। जैसे कि मैं शुद्धात्मा हूँ, अव्याबाध हूँ, अनंत ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य वाला हूँ, अक्रिय हूँ, अडोल हूँ, अमर हूँ।

### घर में दबे हुए धन को जानो

**प्रश्नकर्ता :** 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ, अनंत ज्ञान वाला हूँ, मैं अनंत सुख का धाम हूँ' तो अंदर से वह जो बोलते हैं, वह शक्ति कहाँ से उत्पन्न होती है? उसे कैसे बढ़ाया जा सकता है ?

**दादाश्री :** आप 'अनंत दुःख का धाम' बोलोगे तो दुःखी हो जाओगे। 'अनंत सुख का धाम' बोलोगे तो सुखी हो जाओगे। आत्मा रत्न चिंतामणि है। जैसा चिंतन करे, वैसा हो जाता है। 'अनंत ज्ञान वाला हूँ' कहने से सारा ज्ञान प्रकाशमान हो जाता है। 'अनंत सुख का धाम हूँ।' ऐसा समझ में आ जाए कि खुद सभी सुखों का धाम है तो वह ज्ञान कहलाएगा। मेल नहीं खाता? कहीं न कहीं से मेल खाना चाहिए। हिसाब करते हैं मेल बैठते हैं या नहीं? उसमें तो एक-दो मेल ही बैठाने पड़ते हैं लेकिन इसमें

तो बहुत से पहलू होने चाहिए। हर एक बात में मेल बैठना चाहिए।

खुद के पास अनंत शक्तियाँ हैं लेकिन आवरणों से ढकी पड़ी हैं और खुद के पास अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन है लेकिन उन पर आवरण आ गए हैं अगर घर में धन गड़ा हुआ हो लेकिन अगर उसे पता ही नहीं है तो कैसे मिलेगा ?

### स्वरूप की भजना में अहंकार नहीं है

**प्रश्नकर्ता :** 'मैं शुद्धात्मा हूँ', 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा हम बोलते हैं तो वह भी एक सूक्ष्म अहंकार ही है न ?

**दादाश्री :** नहीं, नहीं। अहंकार कब कहा जाएगा कि खुद जो हैं, उसे नहीं जानते। जहाँ नहीं है, वहाँ आरोपण करने पर वह अहंकार कहा जाएगा। आप शुद्धात्मा हो, फिर 'मैं शुद्धात्मा' बोलने में अहंकार है ही नहीं लेकिन 'मैं शुद्धात्मा' होने के बावजूद आप 'मैं चंदूभाई हूँ' बोलते हो, इसलिए वहाँ पर आपने गलत आरोपण किया। खुद के स्वरूप को नहीं जानते हैं और लोगों ने चंदूभाई नाम दिया और उसे आपने चंदूभाई मान लिया फिर इस स्त्री का पति हूँ, इसका मामा हूँ, इसका चाचा हूँ, फिर सभी जाल पकड़ लेते हैं, वही अहंकार है। जहाँ खुद नहीं है वहाँ आरोपण करना, उसे कहते हैं अहंकार। खुद के स्वरूप का बोलते हैं, वह अहंकार नहीं कहलाता।

### स्वभाव में जाना, वह तू खोज

**प्रश्नकर्ता :** दादा, क्रमिक मार्ग में मन की स्थिरता के लिए ऐसा कहा गया है कि 'जप-यज्ञ करो।' अब यदि हम ऐसा रटन करेंगे कि,



शुद्धात्मा हैं, शुद्धात्मा हैं,' तो इस प्रकार से हमें भी मन की स्थिरता मिलेगी न?

**दादाश्री :** नहीं, आपको ज़रूरत ही नहीं है न, मन की स्थिरता की।

**प्रश्नकर्ता :** वह भी एक तरह का जप-यज्ञ ही हुआ न?

**दादाश्री :** नहीं, अपने यहाँ तो जप-यज्ञ है ही नहीं न! जप-यज्ञ का मतलब क्या? छोटे बच्चों का खेल, बालमंदिर का। मतलब मन की शांति नहीं रहती तो 'राम, राम, राम', 'सोहम्, सोहम्, सोहम्' कुछ बोले, एकाध शब्द, उसके बाद कहेंगे, मैं 'सोहम्' ही बोलता रहता हूँ। तब मैंने कहा, "नहीं, 'खूँटी' बोलते रहना, तब भी वही फल मिलेगा। 'सोहम्' बोलेंगा तब भी वही फल मिलेगा।

वह जप-यज्ञ क्या है? कोई शब्द बोलते रहना। उससे मन में जो विचार उठते हैं, वे सुनाई नहीं देते इसलिए वे विलय हो जाते हैं। उसे एकाग्र कहा जाएगा। एकाग्र रहने से शांति रहती है। तब फिर 'राम' के बजाय 'खूँटी, खूँटी' बोलेंगे तो भी चलेगा। यह शब्द की एकाग्रता हुई। अपने यहाँ तो ऐसा है ही नहीं न! हमें मन को मारना नहीं है। हमें तो मन की जाँच करनी है और देखना है कि वह क्या माल भर कर लाया है। वह ज्ञेय है और हम ज्ञाता हैं। जब तक ज्ञेय है तभी ज्ञाता की कीमत है। हमें जप-तप बगैरह करना नहीं रहा। अंत में तो ज्ञाता-ज्ञेय में ही रहना है। उसमें जप नहीं करना होता।

वस्तु को स्वभाव में लाना, उसी को मोक्ष कहा जाता है। उसे लोग करने गए हैं, जप करो और तप करो। अरे भाई, ऐसा सब क्यों कर रहे हो? स्वभाव में कैसे जा सकते हैं, तू वह खोज न, भाई! इस तूफान में क्यों फँसा है?

नहीं होता, महात्माओं को मिकेनिकल

**प्रश्नकर्ता :** 'मैं शुद्धात्मा हूँ', बोलते रहने से मिकेनिकल नहीं हो जाएगा?

**दादाश्री :** महात्माओं में मिकेनिकल नहीं हो सकता लेकिन बाहर औरों को हो जाता है। वे खुद मिकेनिकल हैं इसलिए मिकेनिकल ही हो जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** कोई अज्ञानता में मिकेनिकल रूप से 'मैं शुद्धात्मा हूँ', बोले तो?

**दादाश्री :** उससे कोई फायदा नहीं होगा और ज्ञान लिया हुआ व्यक्ति मिकेनिकल नहीं बोलता। मिकेनिकल जैसा लगता है ज़रूर लेकिन मिकेनिकल बोलता नहीं है। जिसे यह ज्ञान नहीं मिला हो, वह पूरी रात 'मैं शुद्धात्मा, शुद्धात्मा', बोले तो भी कुछ फायदा नहीं होगा।

**प्रश्नकर्ता :** वह सीधा बोले तो भी मिकेनिकल हो जाता है?

**दादाश्री :** हाँ, वह इसे सीधा बोले तो भी मिकेनिकल क्योंकि जो तू है, तेरी वह मान्यता अभी टूटी नहीं है और फिर तू ऐसा भी कहता है कि 'मैं नगीनदास हूँ'।

**'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह खुद अपनी भजना**

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान लेने से पहले हम, 'मैं चंदूभाई हूँ', 'मैं चंदूभाई हूँ', ऐसा नहीं बोलते थे पर समझते हैं कि वह प्रतीति में रहता ही है। अब ज्ञान लेने के बाद आपने शुद्धात्मा का जो लक्ष दिया है, तब फिर बार-बार 'मैं शुद्धात्मा हूँ', 'मैं शुद्धात्मा हूँ', आप ऐसा जो बोलने के लिए कहते हैं, उसके पीछे का मर्म क्या है? उसके पीछे का रहस्य क्या है?

**दादाश्री :** अगर कर्ज है तो बोलने की ज़रूरत है और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह हम, जिस जगह पर हैं उस जगह पर, मूल क्षेत्र में शुद्धात्मा बोलते हैं। एक बार जान लिया और वह लक्ष में रहे तो बस हो गया लेकिन हम तो यहाँ से हजार मील उल्टे चले हैं और वहाँ पर हम ने जाना कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तो वापस आना पड़ेगा न। वहाँ पर यदि आप ऐसा कहो 'मैं शुद्धात्मा हो गया साहब? तब भाई, इतना उल्टा चला है इसलिए जब वापस उतना उल्टा जाएगा तब तू मूल शुद्धात्मा हो जाएगा इसलिए ऐसे 'शुद्धात्मा, शुद्धात्मा' बोलना पड़ता है। उसके लिए यह सब करना पड़ता है। यह तो, यदि थोड़ा साधारण कहे, 'मैं शुद्धात्मा हूँ, शुद्धात्मा हूँ', दो-दो मिनट, पाँच मिनट तक तो ठीक है और यहाँ पर विधि करते समय बोलते हैं वह ठीक है। जैसे कि आप चंदूभाई हो तो उसे छत पर चढ़कर 'मैं चंदूभाई हूँ', 'मैं चंदूभाई हूँ', ऐसा बोलते रहोगे तब लोग कहेंगे, 'वह तो आप हैं ही, फिर क्यों बोल रहे हो?' उसी प्रकार आप शुद्धात्मा हैं ही, फिर भी 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा इसलिए बोलना है क्योंकि बहुत उल्टा चला है अर्थात् उतना ही वापस आ रहा है। बाकी 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह लक्ष में रहता ही है। यह जो, 'मैं चंदूभाई हूँ' वह उल्टा गया था इसलिए 'मैं चंदूभाई' कहते थे। अब कहते हो, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। ऐसा करते-करते फिर वह (मान्यता), बदल जाएगी।

'मैं चंदूभाई', ऐसा बोलते थे तो चंदूभाई का असर होता था और अब 'मैं शुद्धात्मा', बोलोगे तो शुद्धात्मा का असर होगा। फिर अभेद हो जाएँगे। दोनों एक हो जाएँगे। जो खुद अलग हो गया था वह एक हो जाएगा।

जो चित्त अशुद्ध हो गया था, वही अब

वापस लौटा, यानी जब चित्त शुद्ध हो जाएगा, तब एक ही हो जाएगा फिर ऐसा सुख लगेगा इसलिए किसी को यदि अंदर कम सुख लगता हो तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ, शुद्धात्मा हूँ', बोलना। हम जो हैं, वह बोलने में हर्ज क्या है?

### रहना है आत्मा के उपयोग में

**प्रश्नकर्ता :** अब बाहर नहीं रहना है, आत्मा में ही रहना है तो वह कैसे रहेंगे?

**दादाश्री :** पहले चंदूभाई में किस तरह रहते थे? उसकी कोई कोठरी-वोठरी थी? पहले चंदूभाई थे न आप? वास्तव में चंदूभाई थे?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** यदि कोई चंदूभाई का नाम ले कर कोई बात करे और वह बात आपके कान में पड़े, बीच में दीवार हो तो भी सुन कर फिर मुँह बिगड़ जाता है इसलिए यह बात निर्विवाद हो गई कि आप चंदूभाई थे। अब अगर आप आत्मा हो तो चंदूभाई बिल्कुल भी नहीं हो, फिर चंदूभाई की चाहे कितनी भी बातें हो। मुँह पर कहें लेकिन आप तो आत्मा हैं! चंदूभाई का और आपका क्या लेना-देना? वहाँ पर कोई रूम-वूम है नहीं। इस तरह आत्मा में रहने के लिए उपयोग सेट करना। 'मैं चंदूभाई हूँ', वह उपयोग चला गया और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह उपयोग रहा। अब इस उपयोग में वह पहले वाला उपयोग घुस न जाए उसे जानना है, वहाँ जागृति में रहना है। है कुछ एतराज करने जैसा? बस, इतना ही। जैसे कि जब आप चंदूभाई थे, तब आपको कोई रूम नहीं रखना पड़ता था। यों ही, अंदर हाथ पैर सब, पूरा शरीर चंदूभाई ही था। अब, सब आत्मारूप हो जाना चाहिए। 'मैं आत्मा हूँ' भले ही वह सब वर्तन में आए नहीं, उससे हमें लेना-देना

नहीं है। लेकिन 'मैं आत्मा हूँ', वह भान निरंतर हमें रहना चाहिए।

पहले यह भान होता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ', फिर उसे अनुभव हो जाता है और वह उसी रूप होता जाता है।

### गुणधर्म को समझने से अनुभव में आता है, अरूपी आत्मा

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा अरूपी है तो हमें कैसे दिखाई देगा ?

**दादाश्री :** यह हवा दिखाई नहीं देती लेकिन आपको उसका पता चलता है न कि हवा आई? हवा नहीं है ऐसा भी पता चलता है न? क्यों? हवा के गुणधर्म जानते हैं तो हवा दिखाई देती है। आत्मा के गुणधर्म जानेंगे तो आत्मा दिखाई देगा। अर्थात् गुणधर्मों को देखने और जानने की जरूरत है।

हवा अरूपी है फिर भी सभी समझते हैं कि गरम हवा आई, ठंडी आई। उससे समझ में आता है कि हवा है। उसी प्रकार आत्मा भी अरूपी है। हम आत्मा के जिन गुणों को समझ कर अनुभव कर सकते हैं, वही आत्मा है इसलिए आत्मा आँख से, रूपी चीजों से दिखाई नहीं देता है, अरूपी से दिखाई देता है। अरूपी दर्शन से दिखाई देता है, अरूपी ज्ञान से जाना जाता है और अरूपी चारित्र से पहचाना जा सकता है।

इत्र की सुगंध आती है लेकिन वह सुगंध दिखाई देती है क्या? फिर भी हमें इस बात का पक्का पता चलता है न कि यह 'इत्र है'? उसका हमें यकिन होता है न? इसी प्रकार 'आत्मा है', उसका हमें यकिन होता है! जैसे सुगंध पर से इत्र को पहचाना जा सकता है, उसी प्रकार आत्मा को भी उसके सुख पर से पहचाना जा सकता है,

फिर यह पूरा जगत् जैसा है वैसा दिखाई देता है। उस पर से पक्का पता चल जाता है कि आत्मा के अनंत गुण हैं।

**प्रश्नकर्ता :** जैसे यह हवा दिखाई नहीं देती है लेकिन जब उसकी लहर आती है न, तब पता चलता है और अनुभव भी होता है कि हवा आई। उसी प्रकार तीर्थकरों को आत्मा का विशेष अनुभव होता होगा क्या?

**दादाश्री :** तीर्थकरों को तो बहुत ही विशेष, उससे भी विशेष आत्मा का अनुभव होता है। हमें भी हवा जैसा अनुभव तो होता ही है और आपको आत्मा का जो अनुभव होता है, वह तो प्रतीति विशेषरूप से मजबूत व गाढ़ होने के लिए है।

### स्वगुणों के ध्यान से, अनुभव होता है आत्मा का

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आत्मा के गुणों का अनुभव कैसे कर सकते हैं ?

**दादाश्री :** यह आप अनुभव करते हो न आत्मा के गुणों का, ज्ञान लेने के बाद ?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, हाँ। अर्थात् यों कौन सा गुण ?

**दादाश्री :** ऐसा निराकुलता नामक गुण। आकुल नहीं, व्याकुल नहीं। निराकुलता नामक एक अष्टमांश भाग, जो सिद्धों का गुण है, वह यहाँ पर बरतता है। निराकुलता! फिर अनंत ज्ञान, कोई भी चीज़ आपको उलझन में नहीं डालती। ज्ञान हाज़िर हो कर आपको खबर देता है। अनंत दर्शन, कोई चीज़ आपको रूकावट नहीं डालती। तब समझ हाज़िर हो कर *निकाल* (निपटारा) कर देती है। अनंत शक्ति, चाहे कैसी भी खराब परिस्थिति हो लेकिन आप समभाव से निकल जाते हो, चिंता (वरीज़) किए बगैर।

**प्रश्नकर्ता :** यों समभाव से निकल जाना वह अनंत शक्तियाँ हैं, दादा ?

**दादाश्री :** हाँ ?

**प्रश्नकर्ता :** हमेशा के लिए ?

**दादाश्री :** नहीं, ये सभी अंश इकट्ठे करेगा तब मूल तक पहुँचेगा।

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान के बाद आत्मा का और अधिक ध्यान कैसे कर सकते हैं ?

**दादाश्री :** खुद आत्मा हो गए लेकिन जब खुद के गुणों का ध्यान धरे, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत सुख, इन सभी गुणों का ध्यान धरे, उस ध्येय के भीतर रहे, बोले तब ध्यान उत्पन्न होगा।

**प्रश्नकर्ता :** खुद के गुणधर्म, अनंत ज्ञान-अनंत दर्शन वगैरह ध्यान करे तो वे प्रदेश निरावृत होते हैं क्या ?

**दादाश्री :** निरावृत होते हैं, अवश्य निरावृत होते हैं। आत्मा के गुणों को जितना जानेंगे, उनका ध्यान करेंगे तो उतने ही आत्मा के प्रदेश निरावृत होते जाएँगे, वैसे-वैसे ज्ञान प्रकाशमान होगा और वैसे-वैसे आनंद बढ़ता जाएगा।

**गुणों की आराधना करने से ध्यान उत्पन्न होता है**

ये आत्मा के गुण तो आपको स्वतंत्र रूप से बोलने के लिए दिए हैं। 'मैं अमूर्त हूँ'। मन-वचन-काया मूर्त स्वरूपी हैं, मैं अमूर्त हूँ, इस संसार की सभी झंझटें मूर्त स्वरूपी हैं, मैं अमूर्त हूँ। धर्म-अधर्म मूर्त स्वरूपी हैं, मैं अमूर्त हूँ। लोग जो अपमान करते हैं, वह किसका करते हैं।' जो दिखाई देता है उसका। मेरा अपमान कैसे हो सकता

है ? 'मैं अमूर्त हूँ।' वह गुणों की आराधना है, वही अमूर्त की आराधना है। उनका ध्यान धरने से उनका मनन करने से ज्ञान उत्पन्न होता है। यह तो मनन है, उसमें से ध्यान उत्पन्न होता है। ध्यान सीधा नहीं हो जाता। सीधे ही ध्यान नहीं कर सकते। किसी चीज का मनन करने से ध्यान उत्पन्न होता है। फिर कहता है, "ध्यान तो नहीं हो पाता।" भाई, अब तुझे किसका ध्यान करना है ?

**प्रश्नकर्ता :** अमूर्त हूँ, उस अमूर्त का ध्यान कैसे होगा। वह वस्तु तो मन-वचन-काया से पर है।

**दादाश्री :** नहीं! वही ध्यान कहलाता है। यह वही ध्यान है, अमूर्त का ध्यान तो पूरे दिन आपके भीतर चलता ही रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वहाँ जाते हुए आपके ध्यान में था या नहीं ?

**प्रश्नकर्ता :** था।

**दादाश्री :** वह शुक्लध्यान है, वह अमूर्त का ध्यान है।

**गुणों के अभ्यास से लक्ष होता है मजबूत**

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा के गुणों की जो भजना करते हैं कि 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत शक्ति वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ, अनंत सुख का धाम' वगैरह गुण, तो उससे ज्ञाता-दृष्टापन ज्यादा मजबूत होता जाएगा या फिर जो ज्ञाता-दृष्टापन से पहले है, उसकी भजना करनी है ?

**दादाश्री :** यह तो पहले शुरुआत में कहा जाता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', को मजबूत करने के लिए और फिर हेल्पिंग रहता है।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** कोई कहे, 'मैं मार दूँगा।' तो डरने

की जगह पर उसे क्या होता है कि 'मैं अव्याबाध हूँ, मुझे क्या मारेगा? अगर वह अव्याबाध नहीं जानता हो तो वह कहेगा, 'मुझे कोई मार देगा तो क्या होगा?' यदि कोई कहे, 'काट कर टुकड़े कर दूँगा।' फिर भी हमें मन में ऐसा लगेगा कि 'मैं अव्याबाध हूँ, शरीर के टुकड़े होते हैं।' अर्थात् ऐसे पहले से उसके गुणों की स्टडी करके रखना, मज़बूत करके रखना।

### चरण विधि के अभ्यास से शुद्धात्मा का लक्ष

**प्रश्नकर्ता :** 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसकी माला करने की ज़रूरत है क्या?

**दादाश्री :** उसकी माला करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आत्मा की मालाएँ फिराना नहीं। वह माला स्वरूप नहीं है। शब्द स्वरूप नहीं है वह। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह हमें ख्याल में रहना चाहिए, बस। 'शुद्धात्मा हूँ', वैसा लक्ष रहे तो उसे शुद्धात्मा का ध्यान कहा जाएगा। वह शुक्लध्यान बरतता है। कल्याण हो गया, अब अन्य कुछ इधर-उधर करने की ज़रूरत नहीं है। वह किताब-विताब पढ़ते हो क्या, चरण विधि की?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, पूरी पढ़ता हूँ। रोज़ चरण विधि, नमस्कार विधि, पढ़ता हूँ।

**दादाश्री :** पढ़ना। उतना ही करने की ज़रूरत है। दूसरा, शुद्धात्मा देखना सभी लोगों में उससे बहुत अच्छा रहेगा। यह तो बेस्ट वे (उत्तम रास्ता) है। यदि आज्ञा पालन करोगे न तो बहुत सुंदर रहेगा। आज्ञा उसकी बाड़ है, वर्ना यह सब सड़ जाएगा!

अभी भी शुद्धात्मा होने के बाद अंदर नहीं जाते, बाहर चले जाते हैं क्योंकि अभ्यास नहीं है अंदर जाने का। अनूअभ्यास है न? इसलिए पहले थोड़ा अभ्यास करना चाहिए न?

### लक्ष की लिंक टूटे, तब

**प्रश्नकर्ता :** हमेशा शुद्धात्मा का लक्ष कैसे रखा जा सकता है? लिंक टूट जाती है।

**दादाश्री :** जब भीतर लक्ष की लिंक टूट जाए, तब हमें ऐसा बोलना पड़ेगा, 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ या अनंत दर्शन वाला हूँ', ऐसा सब बोलने से, लिंक फिट हो जाती है। लिंक टूट जाती है, सभी लिंक पौद्गलिक है।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा हो सकता है क्या?

**दादाश्री :** हाँ, होता है न। ऐसा सब तो बहुत बार होता है और वह ज्ञेय स्वरूप से है। ज्ञेय को देखने की लिंक टूट जाती है। ज्ञाता तो रहता ही है लेकिन वह पहले वाली लिंक टूट जाए तो हमारे बोलने से फिर से लिंक शुरू हो जाती है।

लिंक टूट गई, ऐसा पता चलता है, उसका तू ज्ञाता है और लगातार रही तो उसका भी तू ज्ञाता है। हम ज्ञाता स्वरूप ही है। टूटता हो तो टूटे, हमें बस उसे जानना चाहिए।

### आत्मा के गुण बरतें, तभी पुद्गल के गुण खपते हैं

**प्रश्नकर्ता :** आत्मा के जो गुण हैं, वे तो जब पुद्गल का सब खत्म हो जाएगा, तभी वर्तन में आएँगे न? उससे पहले वर्तन में आ सकते हैं क्या?

**दादाश्री :** वह वर्तन में आता है, तभी पुद्गल के गुण खपते हैं। आत्मा की हाज़री के बगैर पुद्गल नहीं खपता।

**प्रश्नकर्ता :** तो कल में ऐसा सोच रहा था कि जब मेरा पुद्गल क्लियर (प्योर) हो जाएगा, उसके बाद आत्मा के गुण अपने आप प्रकट हो जाएँगे।

**दादाश्री :** बाद में नहीं होते। दोनों साथ-साथ ही चलते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, आत्मा के गुण किस तरह से प्रकट करने हैं ?

**दादाश्री :** जो हो चुके हैं, उन्हें क्या प्रकट करना ? वह नहीं जानते हो उसी से यह सब दखल है न ? उसके गुण तो प्रकट (हाज़िर) हैं ही।

**प्रश्नकर्ता :** दर्शन में तो आ गए, अब अनुभव में किस तरह से लाना है ?

**दादाश्री :** दर्शन में हो, वे ही अनुभव में आते हैं। अनुभव के बगैर तो दर्शन में नहीं आते।

### स्वरूप रमणता, ज्ञानी की कृपा से

यहाँ भेद विज्ञानी की कृपा से आत्मा प्राप्त हो जाता है, उसके बाद उसकी रमणता उत्पन्न होती है और रमणता उत्पन्न होने पर वह उसी रूप होता जाता है।

‘ज्ञानीपुरुष’ आपको अवस्थाओं की रमणताओं में से उठा कर आत्म रमणता में बैठा देते हैं। उसके बाद इन अनंत अवतार की अवस्थाओं की रमणताओं का अंत आ जाता है और हमेशा के लिए निरंतर आत्म रमणता उत्पन्न हो जाती है।

एक बार ‘ज्ञानीपुरुष’ से भेंट हो जाए और संयोग मिल जाए तो आत्मा प्राप्त हो जाता है। ‘स्वरूप की रमणता’ में आ जाता है, उसके बाद राग-द्वेष मिट जाते हैं और बन जाता है वीतराग ! वर्ना तो तब तक प्रकृति में ही रमणता ! प्रकृति का पारायण खत्म हो गया तो हो गया वीतराग !

अभी तक पूरा संसार ऐसा ही मानता है कि स्वभाव रमणता तो अत्यंत कठिन चीज़ है।

बात भी सही है लेकिन जहाँ ज्ञानीपुरुष हों, वहाँ पर ऐसे (सिर पर हाथ रखकर कृपा) करते हैं और हो जाता है। ज्ञानीपुरुष मोक्षदाता कहलाते हैं।

आत्मा जानने के बाद अन्य कोई भक्ति करनी रही नहीं न ! आत्मा जानने के बाद स्वरमणता ही करनी है। यह भक्ति, पररमणता है। अर्थात् ज्ञानीपुरुष से आत्मा जान लिया तो स्वरमणता उत्पन्न हो जाएगी इसलिए फिर स्व की रमणता में ही रहना चाहिए।

### स्वभाव में रहना, वह है स्वरमणता

आत्मा की रमणता, ‘मैं आत्मा हूँ और ये मेरे गुणधर्म हैं’ ऐसा चिंतन होना, अर्थात् स्वरूप और स्वभाव में रहना वही स्वरमणता है।

निरंतर आत्मा का लक्ष रहे, एक क्षण के लिए भी रुके बगैर, तब स्वरमणता कहलाती है। सिर्फ खुद का स्वरूप ही स्वरमणता है। स्वरमणता अर्थात् परमात्मा में रमणता और पररमणता अर्थात् इस पुद्गल में, विनाशी में रमणता। यह विनाशी की रमणता, वही संसार है और अविनाशी स्वरूप की रमणता, वह मुक्ति है।

‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, वह निरंतर लक्ष में रहे और दूसरों को शुद्ध देखे तो, वह शुद्ध रमणता कहलाएगी। वह रमणता आत्मा की रमणता कहलाएगी। फिर दूसरी, समभाव से निकाल करते समय आत्मा की रमणता। यदि समभाव से निकाल करते हो तो आत्मा की रमणता। फिर पाँचवा पद (पाँचवी आज्ञा) वह है शुद्धात्मा का खाता, अर्थात् आप यहाँ आए, वह आत्मरमणता। मतलब हमारी पाँचों आज्ञाएँ आत्मरमणता हैं।

निरंतर आत्मस्वरूप में ही रहना, ऐसा कर लेना चाहिए। वह पक्का करने के बाद खत्म। वह

हमेशा रहेगा। निरंतर आत्मा में ही रहना चाहिए। रमणता आत्मा में ही रहनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर व्यवहार में घोटाला हो जाएगा न?

**दादाश्री :** जिसे व्यवहार की जरूरत नहीं है, वही आत्मा में रहेगा न! व्यवहार तो पूर्ण करना पड़ेगा न? इसीलिए सुख ज़रा कम रहता है? फिर ऐसा करते-करते व्यवहार पूर्ण हो जाएगा फिर सुख आएगा। निरंतर आत्म रमणता रहनी चाहिए।

एक बार आत्मा जानने के बाद इन पाँच आज्ञाओं का पालन करे, अर्थात् उस समय वह आत्मरमणता में रहना सीख गया। फिर वह रमणता धीरे-धीरे स्थिर होती जाती है और यह पुद्गल रमणता बंद होती जाती है। उसके बाद जब इस पुद्गल की रमणता से मुक्त हो जाए, तब उसे निरंतर मुक्त कहा जाएगा, वह 'परमानंद' दशा है। पररमणता से मुक्त हुआ। मुक्त ही है, यहाँ बैठे हुए भी मुक्त।

**जिसे अविनाशी की रमणता, मोक्ष उसकी हथेली में**

यह जगत् पौद्गलिक रमणता वाला है। अवस्थाओं में तन्मयाकार रहे, वही कहलाता है संसार। अवस्थाओं में तन्मयाकार अर्थात् पुद्गल रमणता। 'मैं चंदूभाई हूँ,' मैं वकील हूँ, इसका मामा हूँ, इसका ससुर हूँ। इसका फूफा हूँ।' व्यापार में यों फायदा हुआ, यों नुकसान हुआ,' ऐसे जो बोलता रहता है, वह सब पुद्गल की रमणता है। सांसारिक लोग जैसा बोलते रहते हैं, वैसा ही बोलता है कि 'ऐसे कमाया और वैसे चला गया और यह नुकसान हो गया और फलाना है।' पूरे दिन तूफान ही तूफान। 'मुझे सुबह जल्दी उठने की आदत है। सुबह उठते ही मुझे बेड टी पीनी पड़ती है। फिर नाश्ते के साथ चाय ...' ऐसा सब बोलता रहे तो

जानना कि यह पुद्गल रमणता है। जो भी अवस्था उत्पन्न हुई, उसी में रमणता। नींद की अवस्था में रमणता, स्वप्नावस्था में रमणता। जागृत अवस्था में चाय पीने बैठा तो उसमें तन्मयाकार। काम पर गया तो काम में तन्मयाकार। फ़ौरन वाले तो सहज प्रकृति के होते हैं इसलिए वे तन्मयाकार रहते हैं। यह तो फिर तन्मयाकार भी नहीं। यह तो, जब घर पर रहता है, तब काम को याद करता है, काम में तन्मयाकार रहता है। खाते समय चित्त में वहाँ पर व्यापार में तन्मयाकार रहता है। इतनी ज्यादा है अपनी शरारत! और जो स्वरूप में तन्मयाकार रहेगा तो उसका मोक्ष होता जाएगा।

रात-दिन अभी तक विनाशी चीज़ों में ही रमणता थी। अब अविनाशी की रमणता उत्पन्न हुई। जिसे अविनाशी की रमणता है, मोक्ष उसके हाथ में ही है।

**सिद्धस्तुति से यथार्थ रस उत्पन्न होता है**

**प्रश्नकर्ता :** महात्माओं की 'निज वस्तु' में और अधिक रमणता कैसे हो सकती है?

**दादाश्री :** रमणता तो दो चार प्रकार से होती है। अन्य कोई रमणता करनी नहीं आए तो 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' 'मैं शुद्धात्मा हूँ', घंटे-दो घंटे ऐसा बोले तो चलेगा, ऐसे करते-करते रमणता आगे बढ़ती है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आपने जो दो-चार प्रकार की आत्मरमणता कही है, उनके बारे में और अधिक समझाइए।

**दादाश्री :** कितने ही लोग 'शुद्धात्मा शुद्धात्मा', करते हैं और कितने शुद्धात्मा लिख कर करते हैं। तो जो ऐसे लिख कर करते हैं उसमें तो देह भी भीतर रमणता में ही रहती है। देह और वाणी दोनों ही रहते हैं। अतः मन तो भीतर रहता

ही है और कितने तो, यों बाहर व्यवहार चल रहा हो फिर भी मन से यदि वास्तव में शुद्धात्मा में रमणता करे और उसके गुणों में रमणता करे तो वह सिद्धस्तुति कहलाती है। वह बहुत उपयोगी एवं बहुत फल देने वाली चीज़ है।

पहले मोटा-मोटा करे तब पुद्गल की रमणता छूटने लगती है। ऐसे करते-करते सूक्ष्म होता है और यदि उसके गुण बोलते ही रहें और शुद्धात्मा के गुणों में रमणता करें, जैसे कि 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ,' 'मैं अनंत दर्शन वाला हूँ,' 'मैं अनंत सुख का धाम हूँ,' 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ' बोलें तो उतना ही यथार्थ रस उत्पन्न हो जाता है! वह यथार्थ रमणता कहलाती है। वह तुरंत ही, 'ऑन द मॉमेन्ट' फल देती है! खुद के सुख का अनुभव होता है।

**प्रश्नकर्ता :** पुद्गल के रसों को दबाने से आत्मा के रस उत्पन्न होते हैं क्या?

**दादाश्री :** नहीं, दबाने का कोई अर्थ ही नहीं है। वे तो अपने आप फीके हो जाते हैं। एक-एक घंटे तक आत्मा के गुण बोले जाएँ तो तुरंत ही बहुत फल मिलता है। यह चीज़ तो नक्रद फल देती है या फिर हर एक में 'शुद्धात्मा' देखते जाओ तो भी आनंद हो जाए, ऐसा है।

**स्वरूप की आराधना से होता है जगत् विस्मृत**

'जगत् विस्मृत रहना' वही अंतिम साधन है। अब विस्मृत तो अपने आप नहीं रह सकता। अन्य किसी में स्मृति दाखिल किए बगैर जगत् विस्मृत नहीं रह सकता। अर्थात् यथार्थ आराधना उत्पन्न हुए बगैर झूठी आराधना नहीं छूट सकती।

जब आत्मा के स्वरूप की आराधना शुरू होती है, रमणता शुरू होती है, तब यह जगत् विस्मृत रहता है। जब तक यह (सांसारिक) रमणता है तब तक वह विस्मृत रहता है। आत्मा

हाथ में आए बगैर आत्मा की रमणता उत्पन्न नहीं हो सकती, तब तक सिर्फ पौद्गलिक रमणता है।

यहाँ से यह कम हो जाए, तब दूसरी तरफ का बढ़ता है। उस तरफ घटता है तब इस तरफ का बढ़ता है लेकिन यहाँ से वहाँ, उसकी रमणता संसार में ही है। जब वह आत्मा का सुख चखता है तभी से उसकी सभी आसक्तियाँ फीकी पड़ जाती हैं और वह आत्म रमणता में आता है। उसकी यह जो आसक्ति संसार की रमणता में थी, उसके बजाय वह आत्मा की रमणता चखता है, तभी से रमणता उत्पन्न होती है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह लक्ष बैठ जाता है। वही रमणता है, उसी को 'स्वाद चखना' कहते हैं। वह स्वाद चखा इसलिए वह रमणता है। इससे भी ज्यादा उच्च प्रकार का स्वाद है वह इसलिए संसार की रमणता बंद हो जाती है और यह रमणता शुरू हो जाती है इसलिए लक्ष बैठ जाता है, वरना खुद को लक्ष बैठेगा ही नहीं न! इस प्रकार जितना चखता है, उतना ही खुद को पता चलता है कि यह कितना उच्च प्रकार का है।

**गुणों की भजना करने से बढ़ती है आत्मजागृति**

**प्रश्नकर्ता :** आपने पहले बताया था कि आत्मा की रमणता अर्थात् सभी पुद्गल की क्रियाओं को देखना और जानना वही है और फिर यह भी कहा कि आत्मा के गुणों को याद करना तो फिर दोनों में फर्क क्या है?

**दादाश्री :** देखना और जानना वही आत्म रमणता है और ये जो आपकी पौद्गलिक क्रियाएँ होती हैं, चंदूभाई जो करता है, उसे सभी तरह से गहराई में उतर कर, सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को देखना और जानना, वह आत्म रमणता है। गुणों को याद करना, वह तो आत्मा का, खुद का निश्चयबल बढ़ाने के लिए है। जागृति बढ़ाने के लिए, संपूर्ण दशा प्राप्त करने के लिए है।



आत्मा के गुणों को याद करने से आत्मा की दृढ़ता, निश्चयबल बढ़ता है इसलिए गुणों को याद करना है। खुद अपनी पूर्णाहुति करते हैं, गुण याद करके और पौद्गलिक क्रियाओं को देखना और जानना, वह तो पूर्णाहुति होने के बाद ही हो सकता। ये दोनों चीजें अलग हैं।

### आत्मगुणों की भजना ही है सिद्धस्तुति

आत्मा के जो गुणधर्म हैं न, वे जो बोलते हैं न, उसे सिद्धस्तुति कहते हैं। उन्हें यदि बोलते रहेंगे तो वह बहुत काम निकाल लेगा।

‘मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ, अनंत शक्ति वाला हूँ’ दस-दस बार ऐसा बोलेंगे तो कहाँ जाकर पहुँचेंगे! कितना अधिक उपयोग रहता है! और वह भी बिल्कुल शुद्ध उपयोग! उसे सिद्धस्तुति कहा गया है। आत्मा अगोचर है इसलिए उसके गुणों द्वारा ही उसकी भजना हो सकती है। अरे! यह दादा भगवान के एक्जेक्ट (यथार्थ) दर्शन करो तो वह भी संपूर्ण सिद्धस्तुति है।

**प्रश्नकर्ता :** सिद्धस्तुति! ठीक है। सिद्धस्तुति की भजना करनी हो तो आत्मा के गुण बोलने से होगी।

**दादाश्री :** हाँ, सिद्धस्तुति। यहाँ पर इस दुनिया में सिद्धस्तुति कहा है। कभी बोला है क्या? कभी नहीं?

यदि सिद्धस्तुति हो तो अनंत सुख होता है। उसमें कुछ कठिन है क्या? रात तो अपने बाप की ही है न? उसमें किसी और का भाग है क्या?

**प्रश्नकर्ता :** अपने बाप की ही है।

**दादाश्री :** किसी का भाग नहीं है? बाप का भाग तो होगा न?

**प्रश्नकर्ता :** बिल्कुल भी नहीं।

**दादाश्री :** तू कहता है न अपने बाप की

है? उसमें किसी का भी भाग नहीं है। तो ऐसे.. आराम से, एक घंटे तक बोलें! तुझे कैसा लगता है? बहुत कठिन है, क्या? इसमें कुछ कठिन है?

**प्रश्नकर्ता :** कठिन तो नहीं है, दादा।

**दादाश्री :** सिर्फ बस इतना ही है कि उसकी आदत नहीं डाली और अगर प्रैक्टिस करें न तो सब सीधा हो जाएगा। ऐसा है।

**प्रश्नकर्ता :** अगर आत्मा के गुण अपने समक्ष हों तो उन्हें बोलते समय क्या उन गुणों को समझ कर बोलना पड़ेगा?

**दादाश्री :** नहीं, उन्हें सिर्फ बोलना ही है। इसमें गुणों को समझने की जरूरत ही नहीं है। गुण तो अलग ही चीज़ है। उन्हें बोलते समय वह उपयोग कहलाता है। खुद के शुद्ध उपयोग में आ जाते हैं और उससे सिद्धस्तुति होती है इसलिए इसे सिर्फ बोलना ही है। वह भी सिर्फ अपने कान को सुनाई दे, उतना ही। आठ मिनट से ज़्यादा, यह प्रयोग करके देखना। अनुकूल न आए तो रहने देना। अनुकूल आ जाए तो करना। लेकिन यह तो सब को अनुकूल ही आता है।

### सिद्धस्तुति की रमणता से टूटते हैं सभी अंतराय

**प्रश्नकर्ता :** ‘सभी अंतराय टूटें सिद्ध आत्मरमणा से’ यह समझाइए।

**दादाश्री :** हाँ, आत्मा की जो सिद्धस्तुति है, उस सिद्धस्तुति की रमणता से सभी अंतराय टूट जाते हैं।

मूल आत्मा सिद्ध स्वरूप ही है और यदि हम उसकी सिद्धस्तुति बोलें, यदि उसकी रमणता हो तो सब खत्म हो जाएगा। उस आत्मरमणता में सभी अंतराय टूट जाते हैं, भगवान ही बन जाता है।

**प्रश्नकर्ता :** जहाँ जागृति कम पड़ जाए

है, वहाँ क्या करना है? प्रतिक्रमण करना है या निश्चय करना है?

**दादाश्री :** सिद्धस्तुति करनी है। वह जो चरण विधि है न, उसमें से कुछ शब्द निकाल लेने हैं, 'मैं कर रहा हूँ' वह सब और जो बाकी बचा, वह सिद्धस्तुति है। वह बोलना है।

### ज़रूरत है सिर्फ बोलने की ही

**प्रश्नकर्ता :** बोलने के लिए समय निर्धारित कर सकते हैं क्या?

**दादाश्री :** चाहे जिस समय भी बोलो, निर्धारित समय पर नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** मान लीजिए हम ऐसा तय करें, कि सुबह सात से आठ, एक घंटे तक बोलना है। अब उस अनुसार रोज़ निश्चय से करें तो वह ज़्यादा अच्छा है या फिर कभी भी जब हमारा मन हो तब करें और भाव न हो तब नहीं करें?

**दादाश्री :** नहीं! निर्धारित किया हो तो ज़्यादा अच्छा है। निर्धारित न रहे तो फिर कभी भी बोलना। ऐसा निर्धारित समय, कुछ ही लोगों को मिलता है, सभी को नहीं मिलता।

**प्रश्नकर्ता :** सात से आठ, मान लीजिए कि एक घंटे का समय तय किया हो और उसी समय बोलने बैठे चाहे उस समय भाव हो या न हो, फिर भी बोलते हैं।

**दादाश्री :** भाव की मुझे ज़रूरत ही नहीं है न! मैंने ऐसा कहाँ कहा है? कोई कन्डिशनल (शर्त) नहीं है इसमें। यह तो निर्विकल्प की कल्पना है। भाव हो या ना हो, मुझे उसकी कोई ज़रूरत नहीं है। कान को सुनाई दे, ऐसा बोलना। उसमें भाव है ही नहीं। अपने यहाँ तो भाव जैसी कोई चीज़ ही नहीं रहती। भाव केन्सल हो चुका

है वही अक्रम है। यह जो भाव शब्द का उपयोग करते हैं, वह तो इच्छा को भाव कहते हैं इसलिए भाव तो अपने यहाँ केन्सल हो चुका है।

**प्रश्नकर्ता :** मन में कषाय हों, तब भी बोलना है क्या?

**दादाश्री :** कषाय हों तब बोलें तो और भी उत्तम। कषाय को बंद हो जाना पड़ेगा। उन्हें उस समय चले जाना पड़ेगा घर खाली करके। जैसे कि शेरनी के आने पर कोई खड़ा रहता है क्या? वैसा ही है यह, उस समय कषाय भाग जाएँगे।

### चरण विधि करते समय रहता है शुद्ध उपयोग

**प्रश्नकर्ता :** तो चरण विधि कब करनी चाहिए?

**दादाश्री :** दिन में कभी भी जागृत स्थिति में। उस समय आप ऐसा कहना, 'चंदूभाई, चरण विधि करो।'

यह चरण विधि आत्म पक्ष के हेतु के लिए है लेकिन ये अन्य सभी विधियाँ जैसे, नमस्कार विधि, नौ कलमें, वे किसी भी पक्ष में नहीं है। इससे तो सभी छूट गए हैं। 'आउट ऑफ संसार, (संसार से मुक्त) ऐसा मैं हूँ' कहता है। 'क्या तुम आत्मा हो?' तब कहता है, 'आत्मा तो था ही, उसमें मुझ से क्या पूछना? लेकिन मैं इस संसार से छूट रहा हूँ।'

**प्रश्नकर्ता :** वर्ना यदि विधि में नहीं रहे होते तो संसार के...

**दादाश्री :** वर्ना अन्यत्र घुस जाते। संसार में तो हैं ही, संसार के बाहर नहीं निकल सकते इसलिए मैंने यह सब से बड़ा उपाय किया था और कितने ही समय से हमारा यह चलता आया है, ज्ञान होने से पहले से है यह।

**प्रश्नकर्ता :** अब यदि विधि चल रही हो तो उसके भी ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं न?

**दादाश्री :** हाँ, वह भी है न! हमारी विधि ज्ञाता-दृष्टा के बगैर नहीं होती। उपयोगपूर्वक अर्थात् यदि भूलचूक हो जाए तो, उसका फिर ध्यान रहता है। भीतर किसी की फोटो हो न तो वह फोटो भी, एक्जैक्ट चेहरा दिखाई देता है। 'नमो अरिहंताणं' बोलते ही तुरंत हमें अरिहंत दिखाई देते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** फुरसत में 'मैं शुद्धात्मा हूँ', बोलूँ या फिर चरण विधि पढ़ता रहूँ तो क्या वह उपयोग कहलाएगा?

**दादाश्री :** हाँ, चरण विधि इतनी कंठस्थ कर लेनी चाहिए, कि फिर यों बैठे-बैठे पढ़ें, आँखे बंद करके बिना किताब तो एक-एक शब्द पढ़ा जा सके, उस जैसा उच्च प्रकार का अन्य कोई ज्ञाता-ज्ञेय है ही नहीं! वह उसे शुद्ध उपयोग कहलाता है! चरण विधि बोलना और साथ ही बंद आँखों से पढ़ते जाना, वह सब शुद्ध उपयोग है।

### चरण विधि, वह व्यवहार सिद्ध स्तवन

**प्रश्नकर्ता :** अब चरण विधि में जो यह बोला जाता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' और 'अनंत ज्ञान वाला हूँ', तो वह सब किसमें आता है?

**दादाश्री :** आत्मपक्ष में आता है। चरण विधि तो आपको दिन में पढ़नी है। अन्य सभी विधियों में ये नौ कलमें, नमस्कार विधि वगैरह आती है। उसमें तो अगर आपको नींद भी आ जाए तो भी चलेगा। नींद में से फिर जागृत होने पर फिर वह विधि वापस होने लगे तो भी चलेगा लेकिन चरण विधि में ऐसा नहीं चलेगा, वह टुकड़े-टुकड़े में नहीं होनी चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, यह चरण विधि करने से क्या फायदा होता है?

**दादाश्री :** यह चरण विधि, वह व्यवहार सिद्ध का स्तवन है, व्यवहार सिद्ध स्तवन। अर्थात् सिद्ध का स्तवन है यह इसलिए यह खास तौर पर करने जैसी चीज है।

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार सिद्ध स्तवन अर्थात् क्या?

**दादाश्री :** सिद्ध स्तवन। यह हमें सिद्ध स्थिति में ले जाने वाला व्यवहार है इसीलिए यह चरण विधि दी है न!

इसे रोज़ एकाध बार पढ़ते हो?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ लेकिन, यह चरण विधि करना चार्ज कहलाएगा या डिस्चार्ज?

**दादाश्री :** वह चार्ज कहलाएगा। जिसे 'करनी पड़े' ऐसा कहते हैं न, वह चार्ज है और वह भी आज्ञापूर्वक है।

### इन्हें बोलने से, रह सकेगा अलग

चरण विधि में ये दोनों हैं, चरण विधि और सिद्धस्तुति दोनों शामिल हैं। उन्हें जैसे-जैसे पढ़ें वैसे-वैसे वे दोनों पुष्टि देते हैं और मज़बूत बनाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** अगर हम चरण विधि बोलते रहें तो हमें आत्मा के और अनात्मा के गुणधर्मों का पता चलता जाता है।

**दादाश्री :** हाँ।

**प्रश्नकर्ता :** अर्थात् जब कोई भी घटना घटे, अनुरूप घटना घटे, तब हमें पता चलता है कि हम अलग हैं, उस स्थिति को बनाए रखने के लिए इन गुणधर्मों को बलते रहें तो चलेगा?

**दादाश्री :** ऐसा है न, चरण विधि करते समय ज़्यादा जुदापन जैसा लगता है। जिसने एक बार भी चरण विधि नहीं बोली हो लेकिन उसने यह आत्मा प्राप्त किया हो न तो उसे भी बीमारी में अलग (जुदा) ही रहता है तब उसे पता चलता है कि

‘मैं अलग हूँ’। वह स्वभाव है। उसमें तन्मयाकार परिणाम नहीं रहता। जो रोज़ चरण विधि करता है, उसे तो और भी अधिक परिणाम मिलता है। उच्च प्रकार का परिणाम मिलता है लेकिन इसे सिर्फ बीमारी में ही अलग रहता है, कुछ नहीं करता हो तो भी। यह ज्ञान दिया है, अलग ही कर दिया है, उसका अनुभव सिर्फ बीमारी में ही होता है। है ही अलग लेकिन ऐसा क्यों बोलना पड़ता है? क्योंकि जब डिस्चार्ज के परिणाम आते हैं न, उस समय यदि भीतर घबराहट हो तो ऐसा बोलने से वह एकदम से खत्म हो जाती है फिर साफ ही रहता है।

### गुणों की भजना करने से रहती है स्थिरता

**प्रश्नकर्ता :** कभी जब निकाचित कर्म का उदय आए, तब यदि ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’, ऐसा जप-यज्ञ शुरू करे तो वह कर्म हल्का हो जाएगा?

**दादाश्री :** हाँ, हल्का हो जाएगा न! फिर शुद्धात्मा बोलते रहेंगे तो खुद की स्थिरता नहीं डिगेली, हल्का हो जाएगा। निकाचित का मतलब यह है कि अगर ऊपर से भगवान भी उसे दूर करने आएँ तो भी दूर नहीं होता, ऐसे निकाचित कर्म होते हैं। भुगतना ही पड़ता है लेकिन आप शुद्धात्मा बोलते रहोगे तो आपको छूएगा नहीं। कर्म, कर्म की जगह पर पौद्गलिक तरीके से उसका *निकाल* हो जाएगा। आपको नहीं छूएगा।

तबियत नरम हो तो ऐसा कहना कि, ‘चंदूभाई की तबियत नरम रहती है।’ वर्ना यदि ‘मेरी तबियत नरम रहती है’ कहा कि वापस असर हो जाएगा, चिंतन करे वैसा हो जाएगा! हमें तो डॉक्टर पूछे तब मुँह से बोलते हैं कि, ‘खाँसी हुई है’ लेकिन तुरंत ही उसे मिटा देते हैं। हमें कहना पड़ता है कि चंदूभाई को खाँसी हुई है। क्या शुद्धात्मा को खाँसी हुई है? वह तो जिसकी दुकान का माल

है, उसे जाहिर करना पड़ता है लेकिन उसे अपने सिर पर ले लें, वह किस काम का?

महावीर भगवान को चौबीसों घंटे जो शुद्ध उपयोग रहता था, वैसा आपको पाँच मिनट, दस मिनट, पंद्रह मिनट भी रहे तो बहुत अच्छा। भगवान क्या करते थे? पत्थर मारने वाले को भी शुद्ध देखते थे, धौल मारने वाले को भी शुद्ध देखते थे। कोई ऊपर से कीचड़ फेंके, उसे भी शुद्ध देखते थे। मारने वाले को भी शुद्ध देखते थे। यह वीतराग विज्ञान चौबीस तीर्थकरों का शुद्ध उपयोग का ज्ञान है। यहाँ संसार में घूमते-फिरते मोक्ष दे दे, ऐसा है!

जब भीतर तरह-तरह की आँधियाँ आए तब वहाँ भी स्थिरतापूर्वक हल निकालना! आँधियाँ कैसी-कैसी आएँगी? पूर्वकर्म की। यानी भरा हुआ माल है। जो *पूरण* (चार्ज) हुआ था, उसके *गलन* (डिस्चार्ज) होते समय आँधी आती है। उस वक्त आपको स्थिरता पकड़नी चाहिए कि आँधी आई है।

गुणों की भजना करने से स्थिरता रहती है! ‘यह मेरा स्वरूप है और यह नहीं है, यह जिसे हो रहा है, वह मेरा स्वरूप नहीं है’ ऐसा बोलने से भी परेशानी वाले परिणाम बंद हो जाएँगे, खुद पर असर नहीं होगा। आत्मा क्या है, उसके गुण सहित वह बोलें व देखें, तब वह प्रकाशमान होता है।

### विधि करते समय ज्ञानी करते हैं गुणों की प्रतिष्ठा

**प्रश्नकर्ता :** हम जब आपके पास चरण में विधि करते हैं, उस समय आपके भीतर क्या होता है? आप क्या करते हैं?

**दादाश्री :** वह तो मैं प्रतिष्ठा करता हूँ। मैंने आपको जो शुद्धात्मा दिया है न, उसके प्रतिष्ठित गुणों से प्रतिष्ठा करता हूँ। उससे शक्ति बढ़ती जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** प्रतिष्ठा का अर्थ क्या है ?

**दादाश्री :** प्रतिष्ठा अर्थात् आप में जो शक्तियाँ खत्म हो गई थीं, मैं वे शक्तियाँ पूरता हूँ। जैसे 'आप अनंत ज्ञान वाले हो, अनंत दर्शन वाले हो, अनंत शक्ति वाले हो' ऐसे शक्तियाँ पूरता हूँ। आप ऐसे बोलते हो कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' तब कहता हूँ कि 'तू अनंत ज्ञान वाला है, अनंत दर्शन वाला है, अनंत शक्ति वाला है, अनंत सुख का धाम है।' इससे वह सब भीतर समाता जाता है, प्रतिष्ठा होती जाती है। जितनी ज़्यादा प्रतिष्ठा होती है, उतनी ज़्यादा शक्ति प्राप्त होती है।

### धातु मिलाप अर्थात् स्वभाव का मिलाप

आत्मा ज्ञाता-दृष्टा है और आप भी धीरे-धीरे ज्ञाता-दृष्टा पद में आते हो तो आपका और उनका (मूल आत्मा का) दोनों का धातु मिलाप होता है।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, धातु मिलाप के बारे में थोड़ा बताइए न क्योंकि वह शब्द कई बार आता है। यह धातु मिलाप क्या है ?

**दादाश्री :** धातु मिलाप अर्थात् उनकी जो धातु है, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, वैसी यदि अपनी हो जाए तो उसे धातु मिलाप कहा जाएगा। वे जिस धातु के हैं अपनी धातु भी वही होनी चाहिए। अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, अनंत सुख, अव्याबाध वगैरह यदि अपनी भी धातुएँ हो जाएँ तो धातु मिलाप हुआ कहा जाएगा। यों भी दूसरी धातु में फर्क हो तो नहीं चलेगा न! सोने के साथ यदि मिलावट वाला सोना मिलाया जाए तो क्या होगा? वह धातु मिलाप नहीं कहलाएगा।

धातु मिलाप की क्रिया क्या है? जब हम, आत्मा के गुण बोलते हैं, तभी धातु मिलाप होता है। यदि अन्य गुण बोलेंगे तो धातु मिलाप नहीं

होगा। धातु मिलाप अर्थात् स्वभाव मिलाप। उनके स्वभाव में स्वभाव रूप हो जाना। आपके लिए तो मेहनत करना रखा ही कहाँ है इसीलिए कहता हूँ न कि काम निकाल लेना। जल्दी से जल्दी धातु मिलाप कर लेना।

अर्थात् आप तो लोहे से सोना बनते जाओगे और वे तो पारस है लेकिन जब आपका धातु मिलाप होगा तब आपका स्वभाव उनके स्वभाव के जैसा हो जाएगा लेकिन यदि भीतर वाले को भजोगे, तभी न ?

### तेरस-चौदस तक गुण, पूनम होने पर कहलाएगा स्वभाव

**प्रश्नकर्ता :** ये, अनंत दर्शन वाला, अनंत शक्ति वाला, ये सभी आत्मा के गुण कहलाते हैं और 'मैं अपने स्व-स्वभाव वाला शुद्धात्मा हूँ' तो वह स्वभाव और ये गुण, इनमें क्या अंतर है ?

**दादाश्री :** गुण अलग-अलग बोलने पड़ते हैं। जबकि यदि एक ही स्वभाव बोलें तो उसमें सभी आ जाते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, यह समझ में नहीं आया। स्वभाव और गुण, वह तो बोलने की बात हुई लेकिन वह गुण किसे स्पर्श करता है और स्वभाव किसे स्पर्श करता है ?

**दादाश्री :** सभी गुण अलग-अलग बोले जाते हैं, इकट्ठे नहीं। इकट्ठे करने पर स्वभाव कहलाता है। गुण तो दो हुए हों और तीसरा न भी हुआ हो, तब तक वह स्वभाव नहीं कहलाएगा। स्वभाव कब कहलाता है? पूर्ण दशा में। स्वभाव अर्थात् पूर्ण दशा। अर्थात् जब सभी गुण भर जाएँ तब वह स्वभाव कहलाता है फिर भी यदि गुण का नाम लेना हो तो ले सकते हैं। अलग से कहना हो तो गुण कह सकते हैं। एक साथ कहना हो तो स्वभाव कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** एक गुण, मानो कि 'अनंत ज्ञान', उसमें पूरा आ गया तो उसमें सभी आ ही जाएँगे न, दादा?

**दादाश्री :** नहीं, सभी आ जाने चाहिए। जब तक एक-दो गुण हों न, तब तक वह स्वभाव नहीं कहलाता।

तेरस हो, तब तक गुण कहलाता है, चौदस हो, तब तक गुण कहलाता है और पूनम होने पर गुण नहीं कहलाता, वह स्वभाव कहलाता है। चौदस के दिन स्वभाव नहीं कहलाता। पूनम के दिन कहा जाएगा कि चंद्र अपने स्वभाव में आ गया है। फिर चौदस है, तेरस है ऐसा सब नहीं कहेंगे तो चलेगा और यदि कहेंगे तो चलेगा भी नहीं। लोग उसे एक्सेप्ट नहीं करेंगे न! क्योंकि वह स्वभाव कहलाता है।

### आत्मगुणों को बोलने से, होती है सिद्ध सामायिक

यदि एक घंटा, गुँठाणा (४८ मिनट), आत्मा के गुण बोले तो ओहोहो! वह तो सब से बड़ी सामायिक कहलाती है। वह तो सिद्ध सामायिक कहलाती है, सिद्ध सामायिक! कभी ऐसा समय नहीं निकाल सकते चंदूभाई या फिर सरकार हाथ धोकर पीछे पड़ी है? एक घंटा भी मिलता है या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** मिलता है।

**दादाश्री :** अगर आप हमारे कहे अनुसार चलोगे तो आपको बहुत फल मिलेगा। जिस तरह से हम चले हैं, उस तरह से आपको चला रहे हैं। आप अगर उस तरह से करोगे तो बहुत फल मिलेगा और यह नक़द फल है। नाम मात्र भी उधार नहीं है। कभी भी उधार नहीं। यहाँ पर आते हो उतने समय नक़द फल मिलता है

न? इसलिए आपको ज्ञानी के कहे अनुसार करना चाहिए, चंदूभाई आप एक घंटा निकालना। बस, खुद के गुण, वे सभी गुण उच्चतम गुण हैं। सिर्फ बड़े-बड़े गुण ही!

**गुणों की भजना से छूटती है पुद्गल की हुकूमत**

ऐसा अभ्यास नहीं किया है, नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** ऐसी सब सूझ कहाँ पड़ती थी, दादा? सूझ नहीं पड़ती थी न इतनी।

**दादाश्री :** जो पुराने महात्मा हैं न, वे सभी यह कर गए हैं। ये जो नए महात्मा आते हैं न, वे रह जाते हैं, कोई कहता है, 'भाई, पूरे दिन क्या किताब पढ़नी?' पूरे दिन खुद के ही गुणधर्मों का वर्णन करते रहना है।

कृपालुदेव ने जो कहा है, वह पूरा ही वर्णन इसमें आ गया है। अब उसे समझो तब न? बच्चे के हाथ में राज्य की लगाम दे दें लेकिन उसे समझने का प्रयत्न तो करना चाहिए न! तभी राज्य टिकेगा। वर्ना फिर भी राज्य कोई ले नहीं लेगा लेकिन उसका स्वाद नहीं आएगा। स्वाद नहीं आएगा राज्य का। थोड़ी बहुत समाधि रहती है, क्या? ठीक है फिर। ऐसे करते-करते भी यह सब समझ लोगे और दिनभर में जब भी फुरसत हो, तब आत्मा के गुणों को बोलते रहना, उससे पुद्गल बंद हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** पुद्गल बंद हो जाएगा!

**दादाश्री :** हाँ.. पुद्गल की हुकूमत में भी नहीं रहे। खुद के स्वक्षेत्र में बात हुई। खुद के गुणों का ही वर्णन करते रहना है। भगवान ने उसे सिद्धस्तुति कहा है।

खुद के ही गुण 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ' ऐसा पच्चीस-पचास बार बोलना, 'मैं अनंत दर्शन

वाला हूँ' ऐसा पच्चीस-पचास बार, फिर 'मैं अनंत शक्ति वाला हूँ', अनंत सुख का धाम हूँ, अव्याबाध स्वरूप हूँ, अमूर्त हूँ, सूक्ष्म हूँ, अगुरु-लघु स्वभाव वाला हूँ, अविनाशी हूँ, अव्यय हूँ, अच्युत हूँ, अरूपी हूँ, टंकोत्कीर्ण हूँ, टंकोत्कीर्ण तो सौ-सौ बार बोलना चाहिए। टंकोत्कीर्ण अर्थात् क्या कहते हैं कि मुझे शुरू से ही पुद्गल से लेना-देना नहीं था तो फिर पुद्गल समझ जाता है कि इन लोगों ने अपने साथ व्यवहार तोड़ दिया है। यह तो हमें कुछ.. ऐसा बोलना चाहिए। साईन्स है न यह तो। साईन्स के कहे अनुसार नहीं करेंगे तो फिर उसका ऐसा फल नहीं मिलेगा। यह तो हमें भगवान महावीर जैसा रखेगा लेकिन यह तो ऐसा है न, कि करें तब न!

### सिद्ध होने के लिए प्रज्ञा रोज़ करवाती है सिद्धस्तुति

सिद्धस्तुति रोज़ करनी ही चाहिए। हमें सिद्ध बनना है इसलिए सिद्धस्तुति करनी है। जो बनना हो, उसकी स्तुति करो। चंदूभाई से करवानी है, हम तो बन चुके हैं। हमें प्रज्ञा में बैठ कर चंदूभाई से करवानी है। 'मैं' को कहेंगे, 'आप करो और हमारे जैसे हो जाओ' फिर आप भी मुक्त और हम भी मुक्त। हम दोनों की समान भागीदारी। आप पुद्गल स्वभाव वाले और हम चेतन स्वभाव वाले।'

इसमें भी आपको चंदूभाई से बुलवाना है बोलो, 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। फिर उसके स्पंदन आएँगे। और मैं बोल रहा था, उसी तरह से बुलवाना है। हो पाएगा या नहीं? या मैं बुलवाऊँ? रोज़ मैं बुलवाऊँ क्या? आप बुलवाओगे न?

हम ने जो सिद्धस्तुति की थी न, वह आती है या नहीं आती सब को?

प्रश्नकर्ता : आती है न।

दादाश्री : तो फिर इन वाक्यों को पच्चीस-पच्चीस बार, 'अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ, अनंत शक्ति वाला हूँ, अनंत सुख का धाम हूँ' और फिर दूसरे सभी वाक्यों को पाँच-पाँच बार, ऐसे करके पूरा करना। जिस तरह आए, उस तरह करना। उसमें कोई हर्ज नहीं है। आप अपने हिसाब से करना न! मैं बैठा हूँ न, मैं खुद बैठा हूँ न! पास मुझे ही करना है न! आपको जैसा आए, वैसा करना क्योंकि यदि आपकी भूल हुई तो, वह भूल मेरी ही भूल है न!

प्रश्नकर्ता : भूल नहीं होगी दादा, भूल क्यों होगी?

दादाश्री : हाँ, यदि कभी किसी की भूल हो जाए, तब भूल तो वह मेरी ही भूल है न। क्योंकि मैंने उसे सिखाया ही नहीं न इसलिए भूल हुई न!

अब आप सभी आँखें बंद करके 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ' ऐसा पच्चीस बार नहीं अगर सौ बार बोल सको तो बोलना। वहाँ से शुरू करो, पहले बोलो...

प्रश्नकर्ता : अंदर ही बोलना है न?

दादाश्री : अंदर ही बोलना है लेकिन पहले क्या बोलना है, कि मैं चंदूभाई, चंदूभाई के मन-वचन-काया का योग, द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्म से भिन्न ऐसे, हे प्रकट शुद्धात्मा भगवान! 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ,' वह कौन है? वह जैसे मैं कल बुलवा रहा था न और आप बोल रहे थे। आज आप बुलवाओ और चंदूभाई बोलेंगे। कौन बुलवाएगा? 'आप' देखने वाले और बोलने वाला यह चंदूभाई। चलो अब शुरू कर दो।

**प्रश्नकर्ता :** सिद्धस्तुति करवाते समय क्या अनुभव होना चाहिए?

**दादाश्री :** कुछ भी नहीं। कुछ भी अनुभव नहीं होना चाहिए न! आत्मरूप होने के बाद अन्य क्या अनुभव होना चाहिए? लेकिन सिद्धस्तुति का फल तुरंत ही मिलता है। मिले बगैर रहेगा ही नहीं न! वह तो तुरंत ही मिल जाता है इसलिए फिर हमें पूछने का नहीं रहता कि 'भाई, आपको मिला या नहीं मिला?

### सिद्धस्तुति विज्ञान : केश बैंक

ऐसे अगर पाँच-पच्चीस बार बोलेंगे तो फिर क्लियर हो जाएगा। यह तो विज्ञान है! हम ने अभी पूरी तरह से विज्ञान अच्छे से समझा नहीं है। यदि सही तरीके से समझ लें न तो यह विज्ञान तो फल देता ही रहेगा। विज्ञान अर्थात् फल देता ही है। केश (नक्रद) बैंक ही है लेकिन समझ लेने की जरूरत है। जो आत्मा (का लक्ष) हमें करोड़ों उपाय करने के बाद भी प्राप्त नहीं होता, वह हम में उपस्थित हो गया है और वह भी एक ही घंटे में उपस्थित हो गया और यह विज्ञान कैसा है? एक घंटे में ही उपस्थित हो गया। अभी जब रात में जागे तब बल्कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा सामने आ जाता है। सामने नहीं आता?

**प्रश्नकर्ता :** आता है।

**दादाश्री :** वर्ना याद करने पर भी 'शुद्धात्मा' नहीं मिलता लेकिन यह तो सामने से आता है। तो जब इस विज्ञान से इतना साक्षात्कार हुआ है फिर बाकी सब क्यों नहीं होगा? लेकिन समझ लेने की जरूरत है। वास्तव में तो आत्मा के गुण जो हैं न, उन्हें पूरे दिन फुरसत में निरंतर बोलते ही रहना चाहिए। वास्तव में तो यदि फुरसत न हो और कोई परेशानी आए तब बोलना।

**आत्मगुणों की भजना करने से, प्रकट होता है आनंद**

**प्रश्नकर्ता :** यह ज्ञान कैसा है कि व्यवहार की किसी भी प्रकार से उपेक्षा नहीं करता। खुद के अंदर के दिव्यचक्षु निरावृत करने वाला यह ज्ञान है। अज्ञान अवस्था के सामने संपूर्ण रूप से रक्षण करे, ऐसा ज्ञान है और इसी कारण इस ज्ञान में काल, कर्म और माया कभी भी रुकावट नहीं डालते। दादा खुद ही इस संपूर्ण अनुभवदशा में रहते हैं और हम सभी को भी उसी दशा में आना है।

**दादाश्री :** हमारे महात्माओं ने अनंत जन्मों से अपने पुद्गल के ही गुणधर्म गाए हैं। अब दिनभर आत्मा के गुण गाओ। 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, अनंत दर्शन वाला हूँ।'

ज्ञेय अनंत प्रकार के होने से, उनके सामने मैं अनंत ज्ञान वाला ज्ञाता हूँ, दृश्य अनंत प्रकार के होने से उनके सामने मैं अनंत दर्शन वाला हूँ। मैं अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य वाला ऐसा शुद्धात्मा हूँ। मैं अनंत ज्ञानक्रिया, दर्शनक्रिया और शक्ति क्रिया वाला शुद्धात्मा हूँ।

भगवान की सर्व रिलेटिव जंजालों से सर्वथा मुक्त, ऐसा शुद्धात्मा हूँ। शुद्धात्मा के मूल गुणों बोलने से आनंद होता है। मूल गुणों को बोलने से सिद्धस्तुति और यही है शुद्धात्मा। उसे बोलते-बोलते जो आनंद होता है न, वही आत्मा है। अपने यहाँ आनंद की स्थिति है और बाहर तो क्या रहता है?

**प्रश्नकर्ता :** मस्ती रहती है।

**दादाश्री :** यह मस्ती नहीं कहलाती, आनंद कहलाता है और आनंद ही आत्मा है।

- जय सच्चिदानंद



## सिद्धगति में सुख का अनुभव

**प्रश्नकर्ता :** जो सिद्धगति में हैं, मोक्ष में गए हैं, वे लोग जिस देह-रहित सुख का अनुभव करते हैं, तो वह सुख कौन अनुभव करता है?

**दादाश्री :** खुद ही, खुद का अनुभव करता है। खुद, खुद के स्वानुभव सुख को भोगता ही रहता है और वह फिर निरंतर गतिमान है (परिणमन होते रहते हैं)। उन्हें काम ही क्या है? कि ज्ञानक्रिया और दर्शनक्रिया, निरंतर चलती ही रहती हैं!

**प्रश्नकर्ता :** फिर उन्हें क्या जरूरत है वहाँ पर, इस ज्ञानक्रिया-दर्शनक्रिया की?

**दादाश्री :** वह तो स्वभाव है उनका। यह लाइट है, वह निरंतर हमें देखती रहती होगी न? यह लाइट यदि चेतन होती तो हमें निरंतर देखती ही रहती या नहीं देखती रहती? वैसे ही यह चेतन देखता रहता है।

अब वे वहाँ पर रहकर क्या देखते होंगे? अब उनके पास ज्ञान-दर्शन है न, उनके इसी अनंतज्ञान और अनंतदर्शन का उपयोग होता है, इसके परिणाम स्वरूप आनंद रहता है। यानी कि पहले आनंद नहीं होता। आनंद पहले और बाद में ज्ञान और दर्शन, ऐसा नहीं होता। उनके ज्ञान और दर्शन का उपयोग होता है, उससे आनंद रहता ही है! तो उनमें ज्ञान-दर्शन के अलावा और कुछ है ही नहीं। वह स्वरूप ही पूरा ज्ञान स्वरूप है, दर्शन स्वरूप है। यानी हमने हाथ ऊँचा किया, तो दिखा उन्हें।

तो उन्हें भी वापस क्या होता है कि जो देखना है, उसकी भी फिर हानि-वृद्धि होती रहती है। रात हो जाए तो इस भाग में हानि होती है और दूसरे भाग में वृद्धि होती है, इस तरह से हानि-वृद्धि होती है। और अपने यहाँ सुबह के पाँच बजे, तब से ही ये लोग उन्हें दिखने लगते हैं, लेकिन वास्तव में वृद्धि कब दिखती है? दस, ग्यारह, बारह बजे बहुत कुछ दिखता है, अरे लोग सब घूम रहे होते हैं, ऐसे घूम रहे होते हैं, वैसे घूम रहे होते हैं, सब दिखता है। उन्हें देखना है और जानना है, ये दो ही, और गहराई में नहीं उतरना है कि यह चोरी करने निकला है क्या? उन्हें तो अगर कोई जेब काटते हुए भी दिखे, तो भी उन्हें तो देखना और जानना ही है! विषय नहीं हैं उनमें, विषय अर्थात् 'सब्जेक्ट' नहीं हैं। यह कौन-सा विषय है? तब कहते हैं कि जेब काटने का। यह विषय इन लोगों को जानना है, उन्हें तो कुछ भी नहीं है!

मैंने हाथ ऊँचा किया, तो वह सभी सिद्धों को ज्ञान में दिखता है। वे सिद्ध ज्ञेयों को जानते ही रहते हैं। इस जगत् में ज्ञेय और दृश्य दो ही वस्तुएँ हैं। ज्ञेयों को जानते रहते हैं और दृश्यों को देखते रहते हैं। उसका परिणाम क्या? कि अनहद सुख, सुख का अंत ही नहीं, वह स्वाभाविक सुख है।

( परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित )

## दादावाणी

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'साधना' टीवी पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-गिरनार हर रोज पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह 3 से 3-30 तथा शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)
- USA-Canada**
- ✦ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
  - ✦ 'SAB-US' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 EST
- UK**
- ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'SAB-UK' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 - Western European Time (6.30am-7am GMT)
  - ✦ 'Rishtey-UK' पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- Singapore**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (हिन्दी में)
- Australia**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज सुबह 11-30 से 12 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- ✦ 'SAB- International' पर हर रोज दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

- भारत**
- ✦ 'दूरदर्शन'-नेशनल पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
  - ✦ 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा शाम 6-30 से 7, शुक्र शाम 4 से 4-30 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर सोम से शनि रात 8-30 से 9 (हिन्दी में)
  - ✦ 'उड़ीसा प्लस' टीवी पर सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
  - ✦ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात 8 से 9 (गुजराती में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
  - ✦ 'दूरदर्शन'-चंदना पर सोम से शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में) (नया कार्यक्रम)
- USA -Canada**
- ✦ 'Rishtey-USA' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) EST
- UK**
- ✦ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)
- Singapore**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- Australia**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)
- New Zealand**
- ✦ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)
- CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE** ✦ **Rishtey-Asia** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में) UAE Time (9am-9-30am IST)
- USA-UK-Africa-Aus.** ✦ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

### 'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या [dadavani@dadabhabgwan.org](mailto:dadavani@dadabhabgwan.org) इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**14-18 अक्टूबर :** इस बार अफ्रिका प्रवास के दौरान पूज्य श्री का सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम सिर्फ केन्या में नैरोबी में आयोजित हुआ। सत्संग में बहुत से पुराने महात्मा के साथ नए मुमुक्षु भी अपने प्रतिदिन के जीवन व्यवहार के प्रश्नों के समाधान के लिए आए थे। 216 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। बाद में नैवासा में केन्या, तान्ज़ानिया, युगान्डा के अलावा भारत, अमरीका, यू.के, जर्मनी वगैरह देशों के 226 महात्माओं के लिए तीन दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में गुरु-शिष्य किताब पर पारायण बाद जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग व लाइव बैंड के साथ गरबा, दादा दरबार में दर्शन का भी आयोजन हुआ। शिविर में दिवाली, नए साल और नैरोबी सेन्टर के दस साल पूर्ण होने का जश्न पूज्य श्री की निश्रा में उल्लास से मनाया गया।

**19-20 अक्टूबर :** अडालज त्रिमंदीर में दिवाली का पर्व आनंद व उल्लास के साथ मनाया गया। मंदिर, पूज्य नीरू माँ की समाधि व 'वात्सल्य' में LED लाइट व दिये द्वारा रोशनी की गई। दिवाली के दिन पूज्य श्री ने सुबह चोपड़ा पूजन के लिए स्पेशल विधि और शाम को पूज्य श्री व डिम्पल भाई ने अफ्रिका व दुबई सत्संग प्रवास के अनुभव सुनाए। रात में मंदिर में विशेष भक्ति का आयोजन हुआ। समग्र पोडियम, मंदिर सभागृह व जॉयजेनटिक हॉल में बैठकर महात्माओं ने भक्तिरस का आनंद उठाया। नूतन वर्ष की सुबह मंदिर में महात्माओं की उपस्थिति में पूज्य श्री ने सभी भगवान के दर्शन करके परम पूज्य दादाश्री व पूज्य नीरू माँ को अन्नकूट के विविध प्रकार के व्यंजनों को प्रसाद रूप से अर्पण किया। पूज्य श्री द्वारा चॉकलेट के प्रसाद की वर्षा होने से सभी महात्मा आनंदमय हो गए थे। उसके बाद पूज्य श्री ने नए साल के निमित्त पर विशेष संदेश सुनाया बाद में सभी महात्माओं के लिए पूज्य श्री के दर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ जो सुबह से लेकर शाम तक चला। उस दौरान महात्माओं ने दादा से मोक्षमार्ग में प्रगति के लिए शक्तियाँ माँगी और विधि व भक्ति हुई। त्रिमंदीर में सुबह श्री कृष्ण भगवान के समक्ष विविध प्रकार के व्यंजनों को अन्नकूट प्रसाद के रूप में रखकर सजाया गया।

**28-30 अक्टूबर :** तीन साल के बाद गुजरात की राजधानी गांधीनगर में पूज्य श्री के सत्संग व ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। पूज्य श्री ने सत्संग के प्रारंभ में 'जीवन में समायी भिन्न प्रकार की विरोधी मान्यताएँ' इस टॉपिक पर सुंदर तरीके से विवरण किया बाद में महात्मा व मुमुक्षुओं के विविध प्रकार के प्रश्नों का समाधान किया। स्थानीय महात्माओं को पूज्य श्री का लाभ मिले उस हेतु से इन्द्रोड़ा पार्क में मोर्निंग वॉक और आंबेडकर हॉल में सेवार्थी सत्संग का भी आयोजन हुआ। 300 सेवार्थियों को पूज्य श्री के दर्शन व भोजन प्रसाद का लाभ प्राप्त हुआ। सेवार्थी सत्संग में गांधीनगर GNC सेन्टर के बच्चों ने नृत्य द्वारा पूज्य श्री का स्वागत किया। ज्ञानविधि में 700 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की और 4000 से भी ज्यादा महात्माओं की उपस्थिति रही। अंतिम दिन आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में बहुत सारे नए महात्माओं की उपस्थिति रही।

**1-8 नवम्बर :** परम पूज्य दादा भगवान का 110 जन्म जयंती का महोत्सव राजकोट में आठ दिन तक अति आनंद व उल्लास के साथ मनाया गया। प्रथम दिन उद्घाटन समारोह में स्थानीय कोर्डिनेटर महात्माओं ने पूज्य श्री का उल्लासपूर्वक स्वागत किया। थानगढ से आए हुए कलाकारों ने परंपरागत नृत्य करते हुए पूज्य श्री को प्रांगण में रखे श्री सीमंधर स्वामी, श्री कृष्ण भगवान, श्री शिव भगवान के दर्शन के लिए ले गए। पूज्य श्री ने भाईयों और बहनों की साइड दोनों तरफ स्पेशली बनाए गए रेम्प पर चलकर वहाँ उपस्थित सभी महात्मा व मुमुक्षुओं को नजदीक से दर्शन का लाभ दिया। प्रारंभ में स्टेज पर दीप प्रकटाने के बाद काठियावाडी नृत्य की प्रस्तुती हुई। उसके बाद GNC के 140 बच्चों ने दादा के पदों पर विविध प्रकार के नृत्य प्रस्तुत किए और बुद्धि व हृदय की थीम टॉपिक पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की। ब्रेक के बाद पूज्य श्री का एक घंटे के लिए जन्म जयंती के महत्व पर सत्संग हुआ। दूसरे, चौथे और पाँचवें दिन पूज्य श्री के नोंध, आत्मज्ञानी, क्लेश, आत्म पुरुषार्थ टॉपिक पर सत्संग व जनरल प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। महोत्सव के तीसरे दिन परम पूज्य दादाश्री की 110 वी जन्म जयंती मनाई गई। सुबह आठ

बजे विधि, जन्म जयंती संदेश के बाद पूज्य श्री ने जगत् कल्याण की भावना करवाई। परम पूज्य दादाश्री और सभी भगवान के पूजन बाद स्वामी और दादा की दीया-आरती की गई। उसके बाद GNC के बच्चों ने सरप्राइज़ आइटम के तौर पर JJ 111 के गीत को डान्स द्वारा प्रस्तुत किया और अगले साल अडालज त्रिमंदिर संकुल में 111 की जन्म जयंती मनाने की घोषणा की गई। इस घोषणा के दौरान पूज्य श्री ने बताया कि यह जन्म जयंती महात्माओं के लिए और महात्माओं द्वारा मनाया जाएगी फिर सभी महात्मा गण एक दूसरे को आमंत्रित करने के लिए खड़े हो गए। उस समय वातावरण कुछ अलौकिक हो गया था। ब्रेक के बाद पूज्य श्री के दर्शन का कार्यक्रम सुबह से लेकर रात तक चला, उसमें 16,000 से भी ज्यादा महात्माओं ने दर्शन का लाभ पाया था। रात में विशेष भक्ति के कार्यक्रम में भी महात्माओं को बहुत आनंद हुआ। पाँचवे दिन आयोजित ज्ञानविधि में 6000 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की, जो राजकोट त्रिमंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के समय आयोजित ज्ञानविधि के बाद की सब से बड़ी संख्या थी। इस बार थीम पार्क में तीन नई थीमों पर आधारित शो हुए। (१) आ अब लौट चलें (२) मौत की गुफा (३) 'मैं' व 'हुआ सो न्याय' शो भी हुआ था। चिल्ड्रन पार्क में बच्चों के लिए टोटल एक्सपिरियन्स, आग बबूला, मेरी लैन्ड की अद्भुत दुनिया, पपेट शो, एम्फी थिएटर जैसे शो आकर्षण के क्रेन्ड बने। राजकोट की स्थानीय प्रजा ने समग्र आयोजन व हर एक शो की दिल से प्रशंसा की। 60 स्कूलों से 15000 से भी ज्यादा विद्यार्थी चिल्ड्रन पार्क देखने आए। पाँच दिवसीय महात्मा शिविर के पश्चात स्थानीय लोगों के लिए आगे के तीन दिन के लिए थीम पार्क व चिल्ड्रन पार्क खुले रखे गए। देखने वालों की बहुत भीड़ होने से महोत्सव स्थल पूरा भरा हुआ रहता था। लगभग 3000 सेवार्थियों ने दिन-रात निरंतर निःस्वार्थ भाव से सेवा दी थी। यह महोत्सव कुल साढ़े बारह लाख स्कैयर फीट की जगह में आयोजित हुआ था जिसमें 18 किसानों ने अपनी ज़मीन किसी भी अपेक्षा के बगैर जग कल्याण हेतु उपयोग के लिए दी थी।

**7 नवम्बर :** बहुत सालों से जिसकी प्रतीक्षा हो रही थी, उस जामनगर के त्रिमंदिर के निर्माण कार्य की मंजूरी मिलने के बाद दिनांक 7 नवम्बर को पूज्य श्री की पावन निश्रा में त्रिमंदिर की भूमि पूजन विधि आयोजित हुई। सुबह दस बजे पूज्य श्री ने सभी भगवानों के पूजन के बाद नींव में रखने वाली ईंटों व मंदिर निर्माण के प्लान का पूजन किया। भूमिपूजन के बाद स्थानीय अग्रणी महात्माओं द्वारा पूजन की हुई ईंटें रखी गईं। पूज्य श्री ने ज़मीन में कुदाली और फावड़ा द्वारा खुदाई करके सीमेन्ट व रेत का माल डाल कर निर्माण कार्य की शुभ शुरुआत की। उसके बाद यह मंदिर निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो और महात्मा द्वारा कषाय रहित सेवा हो उसके लिए पूज्य श्री ने प्रार्थना करवाई। डिम्पल भाई और प्रशांत भाई ने आज तक जगह के लिए, मंदिर की मंजूरी प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न किए थे उसके बारे में बातचीत की। अंत में महात्माओं के लिए पूज्य श्री का सत्संग हुआ और आरती के बाद महात्माओं ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

**8-10 नवम्बर :** सुरेन्द्रनगर में चार साल के बाद पूज्य श्री के सत्संग व ज्ञानविधि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पहले दिन सत्संग के बाद ज्ञानविधि में 1100 मुमुक्षुओं ने आत्म ज्ञान की प्राप्ति की और लगभग 3000 महात्मा व मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। 200 सेवार्थी-महात्माओं ने पूज्य श्री के साथ मॉर्निंग वॉक, सेवार्थी सत्संग और पूज्य श्री के दर्शन का लाभ प्राप्त किया। पूज्य श्री सुरेन्द्रनगर त्रिमंदिर दर्शन के लिए गए थे। आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में ज्ञान लिए हुए नए महात्मा अधिक संख्या में उपस्थित थे।

### 'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यू कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी ऑर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

**अडालज त्रिमंदिर में आप्तवाणी-13 ( उ. ) पर सत्संग पारायण ( शिविर )**

पेज नं. 140 से वाँचन तथा उसी टोपिक पर सत्संग सामायिक होंगे।

23-30 दिसम्बर - सुबह 10 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 7- सत्संग

31 दिसम्बर (रवि) - सुबह 10 से 12-30 - श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

3) ओढ़ने-बीछाने का चदर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईयाँ साथ में लाएँ। 4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्द आई-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

**अडालज त्रिमंदिर में परम पूज्य दादाश्री की 30वीं पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

2 जनवरी (मंगल) सुबह 7-15 से 9 किरतन-भक्ति, विधि, पूजन, आरती  
शाम 5 से 7 'ज्ञानी पुरुष भाग-1' पुस्तक विमोचन का विशेष कार्यक्रम  
रात 8-30 से 10 विशेष दादाई भक्ति

6 जनवरी (शनि) शाम 4 से 7 सत्संग तथा 7 जनवरी (रवि) सुबह 10 से 12 - आप्तपुत्र सत्संग

7 जनवरी (रवि) शाम 4 से 7-30 ज्ञानविधि

**कडी**

8 व 10 जन. (सोम व बुध) शाम 7-30 से 10-30 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 9 जन. (मंगल) 7 से 10-30 - ज्ञानविधि

स्थल : श्री खेतीवाडी उत्पन्न बाजार समिति, कडी, जि.-महेसाणा (गुजरात).

संपर्क : 9773145031

**आणंद**

5 व 7 फरवरी शाम 7 से 10 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 6 फरवरी 6-30 से 10 - ज्ञानविधि - संपर्क : 9898026589

**गोधरा**

7 व 9 फरवरी (बुध व शुक्र) शाम 6 से 9 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 8 फरवरी (गुरु) 5-30 से 9 - ज्ञानविधि

स्थल : त्रिमंदिर, भामैया गाँव, FCI गोडाउन के सामने, गोधरा, जि.-पंचमहाल (गुजरात). संपर्क : 9825431503

**मुंबई**

**वाशी**

12 व 14 फर. (सोम व बुध) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 13 फर. (मंगल) शाम 6 से 9-30 - ज्ञानविधि

स्थल : देशभक्त बाबु गेनु ग्राउंड, Sec-17, रेमंड शोरूम के सामने, चड्डा क्रैसेंट, CHSL के पीछे, वाशी. संपर्क : 9323528901

**मीरा रोड**

14 व 16 फरवरी (बुध व शुक्र) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग तथा 15 फर. (गुरु) शाम 6 से 9-30 - ज्ञानविधि

स्थल : एस.के. स्टोन ग्राउंड, मीरा-भायंदर रोड, मीरा रोड (इस्ट), जि.-ठाणे.

संपर्क : 9323528901

**विले पारले**

16 व 17 फरवरी (शुक्र व शनि) शाम 6-30 से 9-30 - सत्संग तथा 18 फरवरी (रवि) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि

19 फरवरी (सोम) शाम 6-30 से 9-30 - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : जमनाबाई नरसी स्कूल ग्राउंड, ऑफ़िस मोल के सामने, JVPD स्कीम, विले पारले (वे.) संपर्क : 9323528901

त्रिमंदिरों के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, गोधरा : 9723707738,

अंजार : 9924346622, मोरबी : (02822) 297097, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557

अन्य सेन्ट्रों के संपर्क : अहमदाबाद : (079) 27540408, मुंबई : 9323528901, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335,

दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा : +1 877-505-DADA (3232), यु.के. : +44 330-111-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया : +61 421127947

## आत्मगुणों का ध्यान करने से, होता है खुद उस रूप

किसी भी जगह पर ममता रखने जैसा नहीं है इस दुनिया में। मैं कहता हूँ कि आत्मा को जानो और सिर्फ आत्मा ही आपका है व आपको उसके गुणों के प्रति ममता रखनी है। 'मैं अनंत ज्ञान वाला हूँ, मैं अनंत दर्शन वाला हूँ, मैं अनंत शक्ति वाला हूँ, मैं अनंत सुख का कंद हूँ, अब्याबाध हूँ, अमूर्त हूँ, सूक्ष्म हूँ, अगुरु-लघु हूँ, टंकोत्कीर्ण हूँ, 'कितने गुण हैं उसके! आत्मा के जितने गुण जानेंगे और उनका ध्यान करेंगे तो उतने ही वे प्राप्त होंगे। हम जब ज्ञान देते हैं तो इस तरह से देते हैं कि मन-वचन-काया आपको कभी भी याद न आएँ। 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' कहने के साथ उसके एक-एक गुण गाते जाओगे तो अद्भुत परिणाम आएगा। जैसे कि मैं शुद्धात्मा हूँ, अब्याबाध हूँ, अनंत ज्ञान-दर्शन-चारित्र वाला हूँ, अक्रिय हूँ, अडिग हूँ, अमर हूँ। आत्मा रत्न चिंतामणि है। जैसा चिंतन करे, वैसा ही बन जाता है।

- दादाश्री

